ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश दोहावली

रचयिताः
श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य पूज्यपाद ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय
बाल ब्रह्मचारी श्रीमान् 1008 सद्गुरु
स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रेमप्रकाशी

ॐ

सतनाम साक्षी

नमः टेऊँरामाय

नमः सर्वानन्दाय

श्री प्रेम प्रकाश दोहावली

रचयिताः

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य पूज्यपाद ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय
बाल ब्रह्मचारी श्रीमान् 1008 सद्गुरु
स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रेमप्रकाशी

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण
प्रतियां 1000

सम्वत् 2076, वर्ष 2019
98 वाँ चैत्र मेला, जयपुर

प्रकाशकः
सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज
प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट,
अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर

भेटा : 30/-

मुद्रकः
गणपित, जयपुर
9828112907

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ सं.
1.	ईश प्रार्थना	1
2.	गुरु प्रार्थना	3
3.	प्रार्थना अंक	4
4.	गुरु महिमा	5
5.	गुरु के लक्षण	10
6.	मिश्रित उपदेश	13
7.	शिष्य के लक्षण	14
8.	मंत्र महिमा	18
9.	मुरली प्रशंसा	20
10.	राम नाम महिमा	22
11.	भक्ति अंक	25
12.	सज्जन व दुर्जन लक्षण	28
13.	सन्त के लक्षण	29
14.	सन्त व ज्ञान महिमा	30
15.	सत्संग	33
16.	प्रेम	37
17.	विरह	40
18.	सोना और जागना	41
19.	मनुष्य देह के कर्त्तव्य	44
20.	उदर	46
21.	भगवान पर भरोसा	46
22.	सहनशीलता व धैर्य	48
23.	क्षमा व जीवित मरना	49
24.	मन	51
25.	ब्रह्मचर्य	53
26.	भोजन विधि	55
27.	उपवास महिमा	58
28.	उत्तम व्यवहार व परोपकार	58
29.	कर्म व प्रारब्ध	60
30.	पुरुषार्थ	63
31.	स्वास्थ्य रक्षा	65
32.	सत्य वचन	66
33.	विद्या	68
34.	संतोष और निर्लोभता	69
35.	माया का कौतुक	71
36.	निंदा अंक	72
37.	अहंकार अंक	73
38.	काम प्रभाव	75
39.	स्त्री से घृणा	76
40.	बसन्त महिमा	78
41.	मिश्रित उपदेश	84
42.	यथार्थ वचन	92
43.	मुक्तिमणी प्रश्नोत्तरी	115
44.	शान्ति के दोहे	125
45.	महिमाष्टक	134

ॐ श्री सतनाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश दोहावली

ईश प्रार्थना

प्रथमे वन्दू परम गुरु, पार ब्रह्म शिव रूप।
जिहं प्रसादे पाइया, आतम ब्रह्म स्वरूप।1।
द्वितीय द्वंद्वातीत शुद्ध, सतचित आनंद सार।
अपना आतम जानके, बहु विध करूं जुहार।2।
तृतीय तिन गुण रहत जे, वंदौ ऋषि मुनि आदि।
तांके संग प्रताप ते, पाया पुरुष अनादि।3।
चतुर्थ चारों वेद को, वंदौं बारंबार।
जांके श्रवण मनन से, मिटे मोह अंधकार।4।
पंचम पांचो देव वर, हरिहर सूर्य गणेश।
देवी माता को नमो, हरिये ताप कलेश।5।
षष्ठम दर्शन षष्ठ के, पाद पद्म शिर नाय।
षष्ठ विकार विनाश कर, जो सत्मग दर्शाय।6।
सप्तम सकली सृष्टि को, ब्रह्म रूप पहिचान।
कह टेऊँ तिंह वन्दना, करूं जोड़ युग पान।7।
नमस्कार गुरु को करूं, जो है ब्रह्म स्वरूप।
कह टेऊँ जिस सेव ते, पाया ज्ञान अनूप।8।
वार वार गुरु देव को, करूं प्रेम से वंद।
कह टेऊँ जिस सेव से, पाया परमानंद।9।

सुन प्रभु मेरी प्रार्थना, भक्ति दान मुझ देह।
कह टेऊँ तव भक्ति में, सफल होय तन एह।10।
मैं समर्थ नहिं तरन में, है भव सिंधु अथाह।
कह टेऊँ मुझ पार कर, हे हरि होय मलाह।11।
राग द्वेष की आगि में, जलता हूं दिन रात।
कह टेऊँ कृपा करे, हे हरि दे मोहि शांत।12।
ज्ञान ध्यान गुण भक्ति बिन, भूल पर्यो संसार।
सत् मारग दिखलाइये, हे हरि कृपा धार।13।
दीन हीन बल खीन मैं, मोहि भरोसा तोर।
टेऊँ तुम बिन को नहीं, तूँ ही हरि इक मोर। 14।
संत गुरू की चरन रज, चाहत हूँ मैं राम।
कह टेऊँ मुझ दीजिए, कर कृपा सुखधाम। 15।
संत दरस की लालसा, हे हरि है दिन रात।
कह टेऊँ तिहं दरस कर, पाऊँ चित में शांत।16।
कह टेऊँ कर जोड़ के, माँगू यह वरदान।
दीजे भक्ति भेद बिन, हे हरि कृपा निधान।17।
माधव तेरे चरन में, मन लागे दिन-रात।
कह टेऊँ सुमरन करूं, ज्यूँ चात्रक जल स्वांत।18।
कह टेऊँ ज्यों चाँद से, लागी लगन चकोर।
तैसे हरि तव चरन में, लाग रहे मन मोर।19।
चित चाहत पद सेव को, नैन दरस की प्यास।
कह टेऊँ यह दास की, पूरन कर हरि आस।20।

जैसे बादल बरस कर, देता जल का दान।
कह टेऊँ त्यों कर दया, दर्शन दे भगवान। 21।
चरन शरन मैं आपके, तुम स्वामी हम दास।
नहिं माँगत मैं और कछु, दे हरि चरन निवास।22।
दुख सुख नरक स्वर्ग है, भगवन तेरे साथ।
टेऊँ तुम बिन नहिं चहुँ, पीवन अमृत पाथ।23।
भक्त वत्सल भगवान तुम, हरत भक्त की पीर।
मैं कपटी ठग भक्त हूँ, कैसे धरहुँ धीर।24।
भक्ति भाव से भूल मैं, चाहत विषय विकार।
कह टेऊँ मोहि दीजिये, सतगुरु सत् वीचार।25।

गुरु प्रार्थना

तुम गुरु दाता जगत में, मँगते हैं सब लोक।
अभय दान दे सर्व को, कह टेऊं हर शोक।26।
दुःख भंजन गुरु देव तुम, हरले दूःख विशाल।
कह टेऊँ निज दास पर, कर कृपा कृपाल।27।
भवसागर के बीच में, डूबत हूं गुरुदेव।
कह टेऊँ मोहि काढ ले, दे निज आतम भेव।28।
तुम बिन सत्गुरु देव मुझ, और नहीं है ठौर।
चरन शरन में राख ले, सुन विनती यह मोर। 29।
चरनों का चाकर करो, सत्गुरु कृपा धार।
कह टेऊँ सेवा करूं, निशदिन तेरे द्वार। 30।

विनय करूँ कर जोड़ के, सुनिये श्री गुरुदेव।
कह टेऊँ मोहि दीजिये, चरन कमल की सेव।31।
चरन कमल की सेव कर, हरहूँ तन अभिमान।
कह टेऊँ दुर्मति कटे, पाऊँ आतम ज्ञान।32।
मैं पापी तुम पावना, पाप करो परहार।
कह टेऊँ गुरु सुमति दे, करलो भव से पार।33।
पड़ कर ममता कूप में, बहुत सहे संताप।
कह टेऊँ करुणा करो, सत्गुरु काढो आप।34।

प्रार्थना अंक

प्रार्थना कर प्रेम से, पुन पुरुषार्थ तात।
कह टेऊँ इनके किये, होवे तव कुशलात।35।
प्रार्थना कर प्रेम से, कह टेऊँ बन दास।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास।36।
हृदय से जब प्रार्थना, कह टेऊँ कर कोय।
भगवत के तब कान में, पहुंचत शीघ्र सोय।37।
दीनबंधु तब कर दया, करत पाप सब दूर।
कह टेऊँ गुण ज्ञान दे, सुख संपति भरपूर। 38।
हाथ जोड़ सत्गुरु कहूं, सुन मेरी अर्दास ।
कह टेऊँ कृपा करे, काट कर्म की फास।39।
गुरु को दंडवत वंदना, कर चरनों धर सीस।
कह टेऊँ तुम पाइये, जगतपति जगदीस।40।

गुर को दंडवत वंद कर, हो चरनों का दास।
कह टेऊँ होवे सभी, कारज तेरे रास।41।
गुरु को नित प्रणाम कर, पाद पद्म शिर नाय।
कह टेऊँ त्रिलोक में, काल न तुमको खाय।42।
सत्गुरु को कर वंदना, होय सदा निर्मान।
कह टेऊँ मन से मिटे, मलन देह अभिमान।43।

गुरु महिमा।

गुरु को कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत में, पाय पदार्थ चार।44।
कह टेऊँ कर वंदना, पावन गुरु पद पेख।
गुरु चरनों की धूल से, मिटे करम की रेख।45।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, है गुरु शेष महेश।
कह टेऊँ गुरु सूर्य शशि, है गुरु गौरि गणेश।46।
गुरु से अधिक न और को, देवी देव पछान।
सतगुरु सबसे श्रेष्ठ है, कह टेऊँ सत् जान।47।
एक ओर गुरुदेव हो, दूजे सब संसार।
टेऊँ गुरु को अधिक लख, नित नित करो जुहार।48।
सतगुरु हरि की देह है, यामें संशय नाहिं।
कह टेऊँ गुर ध्यान धर, हरि देखो तिंह माहिं।49।
ध्यान मूल गुरु मूरती, पूजा मूल गुरु पाद।
मंत्र मूल गुरु वचन है, मुक्ति गुरु प्रसाद।50।

कह टेऊँ गुरु देव है, तीर्थ राज प्रयाग।
गंगा यमुना चरन युग, सरस्वति जान पराग।51।
गुरु चरनों की धूल का, तिलक देत जे धीर।
कह टेऊँ कट कर्म वे, पावत ज्ञान गंभीर। 52।
गुरु मूरति का ध्यान धर, गुरु है देवन देव।
कह टेऊँ गुरु नाम जप, पाओ आतम सेव।53।
गुरु चरणामृत गंगजल, वैकुंठ गुरु स्थान।
सत्गुरु विष्णु सरुप है, करते वेद वख्यान।54।
जन्म मरन दुष्टाचरण, हरन हेत अज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान हित, गुरु चरणामृत पान।55।
गुरु चरणामृत पान कर, सीत प्रसादी खाय।
कह टेऊँ गुरु सेव से, मन वांछित फल पाय।56।
तन-मन-धन पुन वचन से, कीजे गुरु की सेव।
गुरु को प्रसन्न जानके, लीजे आतम भेव।57।
पंडित विद्या देत है, देत दवाई वैद।
कह टेऊँ निज ज्ञान दे, सत्गुरु काटत भेद।58।
टेऊँ दीपक ज्ञान बिन, शोभत धाम न देह।
गुरु बिना ज्ञान न होत है, तांते गुरु कर लेह।59।
गुरु भक्ति से हीन जो, पढ़ता वेद पुरान।
कह टेऊँ तिंह सफल नहिं, कर्म धर्म इस्नान।60।
जब तक सत्गुरु मिलत नहिं, तब तक मुक्तिन होय।
कह टेऊँ सो गुरु करे, मुक्ति चहे जो कोय।61।

सूनी चन्द बिन रैन जिमि, सूना दिन बिन भान।
कह टेऊँ त्यों मनुष्य को, गुरु बिन सूना जान। 62।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, सफल न पूजा-पाठ।
कर्म धर्म माला तिलक, भेख पंथ सब ठाठ।63।
गुरु मंत्र बिन मनुष्य का, पितर पिंड नहिं लेत।
कह टेऊँ गुरु मंत्र बिन, देव न आदर देत।64।
लेन मंत्र को जात जब, पित्र नरक छुट जात।
गुरु मंत्र ले जपत जब, पित्र स्वर्ग तब पात।65।
गुरु मंतर अभ्यास बिन, करत क्रिया जो और।
कह टेऊँ तिस जीव का, मन नहिं पावत ठौर।66।
गुरु मंतर जो जपत नहिं, करत गुरु का त्याग।
कह टेऊँ सो नरक में, रहत सदा मन्द भाग।67।
जैसे रवि के किरण ते, तत्क्षण तम मिट जात।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान से, तिमि अज्ञान नशात।68।
टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुरु होय।
बिना श्रम भव सिन्धु से, पार जात सब कोय।69।
करणधार पुन नाव ही, करत युगल मिल पार।
कह टेऊँ इस सिन्धु से, एक न सके उतार।70।
सूर्य दर्पन नैन का, होवत जब मेलाप।
कह टेऊँ तब सहज ही, दीखत निज मुख आप।71।
सत्गुरु अनुभव वेद का, होवत जब संयोग।
कह टेऊँ तब होत है, आतम दरस अरोग।72।

सत्गुरु साँचा पाय कर, पठत वेद नर कोय।
टेऊँ निज अनुभव बिना, आतम दरस न होय।73।
सत्गुरु अनुभव होय भी, बिना वेद के ज्ञान।
असम्भावना मिटत नहिं, कह टेऊँ सत् जान।74।
शास्तर अनुभव सहित हो, बिन सत्गुरु मन माहिं।
अहं ब्रम्ह की नेष्ठा, टेऊँ होवत नाहिं ।75।
गुरु बिन प्रेम न ऊपजे, गुरु बिन जगे न भाग।
कह टेऊँ तांते सदा, गुरु चरनों में लाग।76।
गुरु बिन जुगति न मिलत है, गुरु बिन नहिं प्रकाश।
कह टेऊँ गुरु नाम बिन, वृथा है सब श्वास।77।
गुरु बिन मन दुख देत है, कह टेऊँ दिन रैन।
जब ही सत्गुरु भेटिये, तब मन दे सुख चैन।78।
घर कोल्हू में बैल ज्यों, मूंढ बहे दिन रात।
सत्गुरु बिन छूटे नहिं, कह टेऊँ सत् बात।79।
काम क्रोध मद आदि जे, पाँच चोर तन माहिं।
आतम धन को हरत है, टेऊँ पकड़ो ताँहिं।80।
गुरु बिन वश ना होत है, काम क्रोध अहंकार।
तातें गुरु की शरन ले, कह टेऊं निर्धार। 81।
माया दो प्रकार की, जड़ चेतन धन नार।
विरला को इनसे बचे, टेऊँ इस संसार।82।
जो जन गुरु की शरन ले, सुमरे हरि का नाम।
तांको माया ना लगे, कहता टेऊँ राम।83।

कह टेऊँ संसार में, गुरु जैसा नहीं मीत।
और मित्र सब स्वार्थी, बिन स्वार्थ गुरु नीत।84।
ज्ञान देते गुरुदेव इक, देते और न देव।
कह टेऊँ तांते करो, निशदिन गुरु की सेव।85।
चिंतामणि गुरुदेव है, तांको सेवे जोय।
दुख दरिद्रता दूर कर, सुख पावे जन सोय।86।
सत्गुरु तीरथ रूप है, वचन सु निर्मल नीर।
टेऊँ तामें नायके, पावन करो शरीर। 87।
कृपा कर जिंह देत गुरु, भरे प्रेम का जाम।
कह टेऊँ तिस को चढ़े, मस्ती आठों याम। 88।
तेरे हृदय में सदा, है सुख शांति भंडार।
गुरु कृपा से पाय सो, कह टेऊँ सुख सार।89।
जैसे पय में घृत है, तैसे हरि उर माहिं।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, देख सके को नांहि।90।
जिस सुख को तुम चाहते, सो सुख है तुझ माहिं।
कहे टेऊँ गुरुदेव बिन, तोहि मिले कब नाहिं।91।
दीपक ले गुरु ज्ञान का, अविद्या तम कर दूर।
कह टेऊँ प्रत्यक्ष लखो, जो सब घट भरपूर।92।
गुरु की वाणी वेद सम, पढ़े सुने जन जोय।
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय।93।
सत्गुरु शरनी जाय के, माँगो मुक्ति दान।
कह टेऊँ जिस पाय के, होवे तव कल्याण।94।

सत्गुरु से तुम पायले, अनुभव आतम ज्ञान।
कह टेऊँ तिस ज्ञान से, पाओ पद निर्वान।95।

सत्गुरु की कृपा बिना, सरे न कोई काज।
तांते गुरु की शरण ले, कह टेऊँ तज लाज।96।

सत्गुरु की कृपा बिना, भव सिन्धु तरे न कोय।
कह टेऊँ गुरु शरन ले, जे भव तरना होय।97।

सत्गुरु की कृपा बिना, समझ पड़े ना सार।
टेऊँ समझे सार बिन, साधन सब बेकार। 98।

सत्गुरु की कृपा बिना, मिटे न ममता रोग।
टेऊँ भावें कष्ट सह, करे जाप तप योग।99।

सत्गुरु की कृपा बिना, मिले न मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ गुरु शरन ले, अपना करो उद्धार।100।

सत्गुरु की कृपा बिना, कब चित्त शांति न होय।
कह टेऊँ गुरु शरन ले, विघ्न ना लागे कोय।101।

सत्गुरु के उपदेश बिन, होय न कब कल्यान।
कह टेऊँ निश्चय करो, कहते संत सुजान। 102।

सत्गुरु की कृपा बिना, खुले न दशम द्वार।
कह टेऊँ गुरु शरन ले, सुन अनहद झनकार।103।

सत्गुरु कृपा धार के, दयी नाम की दात।
कह टेऊँ तिहं नाम से, लगन लगी दिन रात। 104।

गुरु के लक्षण

पूरन आतम ज्ञान दे,काटे जो दुख द्वन्द्व।
ऐसे गुरु को करत हूँ, कह टेऊँ नित वंद।105।

पूरन पूरन सर्व में, पूरन रह्यो समाय।
टेऊँ पूरन गुरु मिले, पूरन देत लखाय।106।
पूरन गुरु के वचन में, पूरन जिहँ विश्वास।
कह टेऊँ तिस दास को, होवे ज्ञान प्रकास।107।
जो गुरु सत् उपदेश दे, करत पाप मल नास।
कह टेऊँ तिहं सेव कर, पाओ ब्रह्म हुलास।108।
संसा सकल निवारहीं, देकर आतम ज्ञान।
कह टेऊँ इस जगत में, सत्गुरु सो पहिचान।109।
ब्रह्म निष्ठ ब्रह्म श्रोत्री, सदाचार युत होय।
कह टेऊँ शिष्य हित चहे, सत्गुरु कहिये सोय।110।
भेद भाव से रहित हो, कहत ब्रह्म का ज्ञान।
जूठ जनावे जगत को, सत्गुरु सो पहिचान।111।
कह टेऊँ सो गुरु नहीं, देत कान में फूंक।
लोभी गुरु के चरन में, पड़ना है अतिचूक।112।
राग द्वेष जिसको नहीं, काम क्रोध अहंकार।
सतगुरु सो पहचानिये, कह टेऊँ निर्धार।113।
क्या गृही पुनि विरक्त क्या, ब्रह्मज्ञान जिहँ होय।
कह टेऊँ सत् बोध दे, सत्गुरु कहिये सोय।114।
पठित वेद मय पुष्ट तन, ज्ञान चक्षु पुन होय।
जानत शंका चक्र को, करणधार गुरु सोय।115।
करणधार गुरु है वही, नाम नाव जिस पास।
टेऊँ भव से पार कर, जो आवे कर आस।116।

सत्गुरु सोई जानिये, जो शिष्य दूःख नशाय।
कह टेऊँ तिन लोक में, जहँ तहँ करे सहाय।117।
चंदन पारस भृंग सम, बहु गुरु जग के माहिं।
कह टेऊँ जो दीप वत्, ऐसे बहुते नाहिं।118।
सत्गुरु ऐसा कीजिये, जो सत् शब्द सुनाय।
कह टेऊँ शिष्य को सदा, सुमरन माहिं लगाय।119।
सत्गुरु ऐसा कीजिये, तम अज्ञान मिटाय।
कह टेऊँ उर में सदा, अनुभव ज्योति जगाय।120।
सत्गुरु ऐसा कीजिये, निरखत करे निहाल।
कह टेऊँ कृपा करे, काटे जग जंजाल। 121।
सत्गुरु ऐसा कीजिये, दूर करे अभिमान।
दया गरीबी बंदगी, कह टेऊँ दे दान।122।
सत्गुरु साँचा जान हो, जो मेटे जम त्रास।
तन मन तांको दीजिये, कह टेऊँ हो दास।123।
जैसे नौका काठ की, करत सिंधु से पार।
कह टेऊँ ज्ञानी गुरू, त्यों तारत संसार।124।
टेऊँ नाव पखान चढ़, पहुँचत पार न कोय।
ज्ञान हीन गुरु पाय तिम, भव सिन्धु पार न होय।125।
ऐसा गुरु नहिं कीजिये, ज्ञान ध्यान ते हीन।
कह टेऊँ बिन ज्ञान के, जानो गुरु नाबीन।126।
ज्ञान ध्यान कुछ देत नहिं, केवल कंठी पाय।
ऐसा गुरु नहिं कीजिये, कह टेऊँ समुझाय।127।

मंत्र जंत्र को पढ़त है, देत न सत्य उपदेश।
गुरु बन बैठत ज्ञान बिन, धिक जीवन धिक भेष।128।
सत्य मंतर जो देत नहिं, केवल फूंकत कान।
कह टेऊँ धन मांग हीं, सत्गुरु सो मत जान।129।
लोभी गुरु के बोध से, मिटत न मन संताप।
संतोषी गुरु ज्ञान से, मिटत सर्व दुःख पाप।130।
गावत हरिगुन प्रेम बिन, छोड़त लोभ न मोह।
कह टेऊँ सो गुरु नहीं, करत राम से द्रोह।131।
गुरु गूँगे मस्तान ते, होय न आतम ज्ञान।
कह टेऊँ मुक्ति चहो, सत्गुरु करो सुजान।132।
मंतर तंतर को करत, ऐसे गुरु अनेक।
कह टेऊँ जो ज्ञान दे, सो गुरु है को एक।133।
तन के गुरु बहु मिलत हैं, कह टेऊँ जग माहिं।
दुर्लभ है मन का गुरु, मिलत भाग बिन नाहिं।134।
मन का गुरु तुम ना किया, तन का कीना तात।
टेऊँ जब मन का करो, तब ही हो कुशलात।135।
सत्गुरु अपने दास का, लेखा देत निवार।
कह टेऊँ परलोक तिस, कोय न पूछन हार।136।

मिश्रित उपदेश

सत्गुरु पूरन पाइया, होया कारज रास।
कह टेऊँ मंगल भया, टूटी जम की फास।137।

गुरु का दर्शन देख के, टेऊँ भया निहाल।
सब अंग फूले फाग ज्यों, देखा दीन दयाल।138।
अंतर बाहर आत्मा, सत्गुरु दिया दिखाय।
कह टेऊँ मैं देख के, दीना दुःख मिटाय।139।
गुरु की ऊप अनूप है, कहते वेद पुरान।
देव न पावत पार तिहँ, टेऊँ मनुष्य क्या जान।140।
कह टेऊँ इस जगत में, एक कर्म है सार।
सत्गुरु से सत् शब्द ले, सुमरन कर हर बार।141।
जप मंतर गुरुदेव का, धर गुरु चरने ध्यान।
अर्थ विचारे शब्द का, पाओ ब्रह्म विज्ञान।142।
सुरति लगे गुरु शब्द जिस, मन गुरु मूरत माहिं।
कह टेऊँ कब ना लगे, यमपुर का दुख ताहिं।143।
सत्गुरु को जिन शिर दिया, तजे लोक की लाज।
कह टेऊँ सब होवहिं, तिनके पूरन काज।144।
शब्द गुरु का रूप है, गुरू शब्द स्वरूप।
कह टेऊँ तज भेद को, सुमरो शब्द अनूप।145।
तीन लोक की सम्पदा, त्यागे शिष्य सुजान।
आतम ब्रह्म अभेद का, गुरु से लीजे ज्ञान।146।
ज्ञान बिना नाशे नहीं, मिथ्या जगत पसार।
कह टेऊँ सो ज्ञान दे, सत्गुरु परम उदार।147।

शिष्य के लक्षण

सत्गुरु आगे भेट शिष्य, देहि देह अभिमान।
सेवहुँ गुरु के चरण युग, तरक दृष्टि मत आन।148।

चंद्र रूप गुरुदेव हैं, चंद्रमणि शिष्य जान।
देखत उमँगे प्रेम जिहँ, सो पूरन पहचान।149।
कह टेऊँ इस जगत में, देखे शिष्य अनेक।
सत्गुरु को दे सीस जो, ऐसा कोई एक।150।
जैसे सुनकर नाद को, देत मृग निज प्रान।
टेऊँ तिम गुरु शब्द सुन, दे शिर शिष्य प्रधान।151।
चरन कमल गुरुदेव के, सुंदर फूल समान।
कह टेऊँ शिष्य भंवर ज्यों, देखत हो मस्तान। 152।
शीलवंत चित्त सुमति युत, आज्ञाकारी जोय।
गुरुसेवा रति गर्व गति, कह टेऊँ शिष्य सोय।153।
बादल की सुन गर्जना, जैसे नाचत मोर।
तैसे शिष्य गुरु शब्द सुनि, होत मगन निश भोर।154।
कह टेऊँ गुरु वचन को, मानत है शिष्य जोय।
आज्ञा भंग न करत कब, पावत मुक्ति सोय।155।
टेऊँ तरक कुतरक से, हो शिष्य श्रद्धा हीन।
श्रद्धा बिन पावत नहीं, ब्रह्म ज्ञान प्रवीन।156।
गुरु की सेवा जो करे, गुरु की आज्ञा मान।
कह टेऊँ गुरु नाम रट, गुरमुख सो पहचान।157।
राज न चाहे इन्द्र का, ना वैकुण्ठ की आस।
गुरु चरनो में लीन हो, गुरुमुख कहिये तास।158।
सत्गुरु के नित पास रह, गुरु से राखे हेत।
कह टेऊँ गुरूमुख वही, ब्रह्मानंद सुख लेत।159।

गुरु आज्ञा पालन करे, गहे गुरू से ज्ञान।
कह टेऊँ सुख दुःख सहे, गुरमुख सो परवान।160।
सुख दुःख में त्यागे नहीं, सत्गुरु का जो संग।
कह टेऊँ तिस दास को, लगे राम का रंग।161।
स्वामी आज्ञा में रहे, सहे सीस पर दूःख।
कह टेऊँ सेवक वही, जो नहिं चाहत सूख।162।
सेवा में तत्पर रहे, कबहूँ चूकत नाहिं।
स्वामी के मन भावहीं, सेवक मानो ताहिं।163।
कह टेऊँ इस जगत में, प्रेमी जानो सोय।
विछुड़त ही गुरुदेव के, रोय देत है जोय।164।
सत्गुरु विछुड़े रोवहीं, पूरा प्रेम न जान।
टेऊँ पूरा प्रेम हो, विछुड़त त्यागे प्रान।165।
मैं मेरा गुरु चरन में, जो जन भेंट चढ़ाय।
कह टेऊँ तिस दास के, काल निकट नहिं आय।166।
मैं मेरा बन्धन बड़ा, सब जग बांधा जास।
कह टेऊँ सो छूटहीं, जो गुरु का हो दास।167।
गुरु के बन्धन जो रहे, बांधे ना यम ताहिं।
कह टेऊँ सो मुक्त हो, जनम लेत फिर नाहिं।168।
बादल सम है सत्गुरु, करत ज्ञान गजकार।
कह टेऊँ वर्षा करें, वचनों की हर वार।169।
सत्गुरु बादल बरसीया, अपनी कृपा धार।
कह टेऊँ हर ताप को, दीना सूख अपार।170।

बादल कब कब बरसते, सत्गुरु बारह मास।
कह टेऊँ शिष्य धरन की, पूरण करत प्यास।171।
सत्गुरु बादल बरसिया, आंगन मेरे आज।
कह टेऊँ मंगल भया, पूरन होया काज।172।
जो सत्गुरु निज दास को, दिखलावत भगवान।
टेऊँ तिस गुरुदेव पर, वारूँ तन-मन प्रान।173।
गुरमुख भल फिरता रहे, मनमुख हो इक ठाम।
गुरमुख दे सुख सर्व को, मनमुख दे दुःख धाम।174।
स्वामी की आज्ञा तजे, मन भावत कर जोय।
कह टेऊँ निश्चय कहूँ, बेमुख जानो सोय।175।
आज्ञा गुरु की भंग कर, विचरे जो संसार।
कह टेऊँ तांका कभी, होवत ना निस्तार।176।
गुरु को जे नहिं सेवहीं, ते नर ठौर न पाय।
कह टेऊँ गुरु सेव बिन, जन्म जन्म पछताय।177।
कह टेऊँ गुरुदेव को, हूँ तूँ जो कह देत।
मर कर सो शमशान में, वृक्ष होत या प्रेत।178।
मानुष तन को पाय जिंह, सतगुरु कीना नाहिं।
ऐसे निगुरे मनुष्य का, मुख देखो मत काहिं।179।
गुरु की आज्ञा भंग कर, माने मन की बात।
कह टेऊँ मनमुख वही, दुःखी होय दिन रात।180।
गुरमुख जागी हरि रटे, मनमुख विषय कमाय।
कह टेऊँ गुरमुख सुखी, मनमुख बहु दुःख पाय।181।

हरि से बेमुख होय के, पालत जो परिवार।
कह टेऊँ सो मूंढ नर, भटकत बारम्बार।182।

मंत्र महिमा

हरि के मंत्र अनन्त हैं, जांमे श्रद्धा होय।
कह टेऊँ नित प्रेम से, जपले मंत्र सोय।183।
एक दोय छे अष्ट पुन, द्वादश अक्षर जान।
अष्टादश चौबीस पुन, बत्तीस अक्षर मान।184।
ऐसे तारक मंत्र जे, ग्रंथन किये बखान।
कह टेऊँ गुरु देहिं जो, सो तुम जान प्रधान।185।
कह टेऊँ गुरु मंत्र को, जपले बारम्बार।
जगत भाव को भूल कर, पाओ मोक्ष द्वार। 186।
सफल करो निज श्वास को, गुरु का शब्द कमाय।
कह टेऊँ गुरु शब्द बिन, वृथा नाहिं गवांय।187।
टेऊँ सोहम् जाप जप, गाफिल कबहुँ न होय।
इक इक श्वास अमोल है, ताहिं न वृथा खोय।188।
टेऊँ सोहम् जाप तुम, श्वास श्वास जप लेह।
दोनों पद की लक्ष लख, पाओ मुक्तिविदेह।189।
हृदय में गुरु शब्द की, बाजे अनहद बीन।
कह टेऊँ सुन ताहिं को, गुरुमुख हो लवलीन।190।
ओम् जाप उर में करो, छोड़ श्वास की आस।
अर्थ भावना दृढ़ कर, टूटे जम की फास।191।

ओम् सोहम् है रूप इक, कहते वेद पुरान।
कह टेऊँ जो भेद कह, मूंढ तांहि पहचान।192।
जांसे आपापन मिटे, ऐसा करले जाप।
कह टेऊँ तिन लोक में, तनिक न लागे ताप।193।
शब्द गुरु का रूप है, रंचक भेद न जान।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ सूख महान।194।
बाहर हरि ना खोजिये, अंतर ही लिव लाय।
गुरू मंतर अभ्यास ते, कह टेऊँ तिहं पाय।195।
सत्गुरु के सत् शब्द का, अहनिश कर अभ्यास।
कह टेऊँ संसार के, विघ्न होय सब नास।196।
सत्गुरु के सत् शब्द का, सुमरन कर मन मांहि।
कह टेऊँ सो पाय पद, काल कर्म जहँ नाहिं।197।
सत्गुरु के सत् शब्द का, करले निशदिन जाप।
कह टेऊँ जिस जाप ते, मिटे सकल संताप।198।
सत्गुरु के सत् शब्द का, सुमरन कर हरवार।
कह टेऊँ जिहं सुमरते, अनुभव खुले द्वार।199।
सत्गुरु के सत् शब्द का, सुमरन कर दिन रैन।
कह टेऊँ जिहं सुमरते, चित्त में उपजे चैन।200।
सत्गुरु के निज नाम का, हृदय कर विचार।
कह टेऊँ अविद्या मिटे, पाओ मोक्ष द्वार।201।
सत्गुरु के निज नाम को, जानो सत्गुरु रूप।
कह टेऊँ तिस सुमर के, पाओ शुद्ध स्वरूप।202।

सत्गुरु के निज नाम को, सुमरो श्वासों श्वास।
कह टेऊँ जिस सुमरते, टूटे जम की फांस।203।
सत्गुरु के निज नाम को, जानो अपना मीत।
कह टेऊँ तिन लोक में, संग रहत जो नीत।204।
सत्गुरु के निज नाम से, लाओ अपना चीत।
कह टेऊँ मन शत्रु पर, निशदिन पाओ जीत। 205।

मुरली प्रशंसा

शब्द बीन घट में बजे, सर्व राग तिंह माहिं।
कह टेऊँ सगुरा सुने, निगुरा सुनता नाहिं।206।
बाज रही यह बंसरी, सब घट में भरपूर।
टेऊँ गुरु प्रसाद ते, सुनता कोई शूर।207।
अनहद मुरली रसभरी, बाजे आठों याम।
कह टेऊँ जो तां सुने, पावे सो विश्राम।208।
इस मुरली की कीर्ती, मुख ते कही न जाय।
कह टेऊँ कृपा करे, सत्गुरु दयी लखाय।209।
इस मुरली के तान की, क्या कहूँ मैं बात।
कह टेऊँ जो सुनत है, मगन रहत दिन रात।210।
इस मुरली ने मोहिया, सुरनर मुनिजन देव।
कह टेऊँ गुरुदेव से, जानो इसका भेव।211।
टेऊँ जितने साज हैं, मुरली सम नहिं कोय।
मनमुख को ना भावहीं, गुरुमुख भावे सोय।212।

मन मोहन की बंसरी, बाजे गगन मंझार।
कह टेऊँ सो जन सुने, जांका गुरु से प्यार।213।
मन मोहन की बंसरी, बाजे आदि जुगादि।
कह टेऊँ को सुनत है, गुरुमुख गुरू प्रसाद।214।
मन मोहन की बंसरी, बाजे श्वासों श्वास।
कह टेऊँ जो सुनत है, हो तिंह कारज रास।215।
मन मोहन की बंसरी, बाजत है दिन रैन।
कह टेऊँ जांके सुने, चित्त में उपजे चैन।216।
मुरली सुन्दर श्याम की, समुझी जिंह बुद्धिमान।
कह टेऊँ पाया तिसे, मन में मोद महान।217।
वृंदावन के बीच में, बाजे मधुरी बीन।
कह टेऊँ सुनकर सखी, हरि अंतर भयी लीन।218।
मन मोहन का ध्यान धर, जप मन मोहन जाप।
कह टेऊँ सुधि ना रही, हो गयी आपो आप।219।
मन मोहन निज आतमा, सखी वृत्तियां जान।
वृंदाबन यह बदन है, टेऊँ ऐसे मान।220।
बंसी गुरु का शब्द है, बाजत हृदय माहिं।
कह टेऊँ सो जानता, गुरु कृपा हो जाहिं।221।
मोहन की छबि देख के, सखी भयी मस्तान।
कह टेऊँ तद्‌रूप हो, भूल गयी तन प्रान।222।
ब्रज मंडल संसार है, रास प्रकृति खेल।
नानाा वपु धर आतमा, करते अद्‌भुत केल।223।

परम पवित्र रास नित, खेलत आतम देव।
टेऊँ अज्ञ न जानहिं, ज्ञानी जानत भेव।224।

राम नाम महिमा

राम महातम को लखे, राम महातम गूढ।
कह टेऊँ बेअंत है, क्या जाने नर मूंढ।225।
कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।226।
राम जपन में जीभ पुन, कर पद दूखे नाहिं।
टेऊँ दाम न लगत कछु, क्यों नहिं जपते ताहिं।227।
राम नाम की पत्रिका, तात पढ़ो दिन रात।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान ले, लखले अपनी जात।228।
राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश।
कह टेऊँ मन शांति हो, छूटे ताप क्लेश।229।
राम नाम उलटा जपे, बालमीक भये पार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं, सुलटा राम उचार।230।
अर्ध राम का नाम जप, गज का भया उद्धार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं, पूरन राम पुकार।231।
राम नाम सत्य वचन पुन, मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में, सो नर गूंगा सोय।232।
राम भजन जहं होत है, तहां ब्राजत राम।
राम जहां सुख धाम तहं, रहे न कलना काम।233।

आलस तज उद्यम करो, राम जपन के हेत।
भोग रोग मय जानके, सुमरन कर धर चेत।234।
कर माला मन ध्यान धर, रसना से रट राम।
कह टेऊँ इस जाप से, पाओ हरि का धाम।235।
कह टेऊँ संसार के, छोड़े सबहीं काम।
जागत सोवत राम जप, जो सत् चित सुखधाम।236।
अंतर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरिनाम।
जिह्वा मन वा प्रान से, कह टेऊँ रट राम।237।
चार अठारह षष्ट कह, कलि हरिनाम अधार।
कह टेऊँ जो जपत तिंह, तिसका होत उद्धार।238।
काम धेनु अर कल्पतरु, चिन्तामणि हरिनाम।
कह टेऊँ जिंह सेवते, पूरण होवे काम।239।
कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिंह सुमर के, पाओ मोक्ष द्वार।240।
बेड़ा हरि का नाम है, चढ़त न जे नर तांहि।
कह टेऊँ से मूंढ नर, डूबत भव जल मांहि।241।
हरि का नाम न भावहीं, हरिजस सुनता नांहि।
कह टेऊँ सो मूण्ढ नर, जात चुरासी मांहि।242।
इक भगवत के नाम बिनु, बोल न दूजी बात।
कह टेऊँ हरि नाम का, सुमरन कर दिन रात।243।
ज्यों भोगों को भजत हो, त्यों तुम भज हरिनाम।
कह टेऊँ हरि भजन से, पाओ मुक्ति धाम।244।

हरि नाम की ओट ले, हरि नाम की टेक।
कह टेऊँ भव जल तरो, सुमरे सहित विवेक ।245।
हरि सुमरन की सेज पर, सोय करो विश्राम।
कह टेऊँ हरि जाप बिन, मिले न कब आराम ।246।
गंगा हरती पाप को, शशि हरता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप ।247।
दुनिया के व्यवहार में, पचि पचि मरे गंवार।
कह टेऊँ हरि ना जपे, तांते तांहि धिकार ।248।
मोती बिन शोभत नहीं, ज्यों सीपी जग मांहि।
टेऊँ त्यों हरिनाम बिन, जिह्वा शोभत नांहि ।249।
दीपक बिन शोभत नहीं, जैसे सुन्दर धाम।
तैसे मुख शोभत नहीं, टेऊँ बिन हरिनाम ।250।
जो जन माधव को तजे, माया पीछे धाय।
कह टेऊँ तां पुरुष के, दोनों हाथ न आय ।251।
जो जन माया को तजे, सुमरे हरि का नाम।
कह टेऊँ तां पुरुष को, मिले दाम पुन राम ।252।
मुख से सुमरन ना करे, कर से देहि न दान।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, जीवन वृथा जान ।253।
निमक हरि का खाय के, जपे न जो हरिनाम।
टेऊँ शास्त्र वेद तिंह, कहते निमकहराम ।254।
सर्व पदारथ जगत में, दीना जिंह करतार।
टेऊँ तिंह जो ना जपे, तांको है फिटकार ।255।

मानुष तन हरि ने दिया, दीना धन सुत धाम।
टेऊँ तांहि विसार के, होय न निमकहराम।256।
शत कामों को छोड़कर, पहले कर इस्नान।
सहस्त्र तज भोजन करो, लाख छोड़कर दान।257।
कोटि काम को छोड़कर, पहिले सत्संग जाय।
कह टेऊँ सब काम तज, गोविन्द के गुण गाय।258।
कह टेऊँ संसार में, लेह नाम की ओट।
अन्तकाल दुःख ना लगे, मिटे कर्म अघ कोट।259।
अंधा झंगल भार शिर, वर्षा गिरि चढ़ जाय।
टेऊँ इनसे अधिक दुःख, नाम भुलाये पाय।260।
जग को जूठा जान के, भजते जो भगवान।
कह टेऊँ संसार में, सो जन है बुद्धिमान।261।
काया गढ़ को जीत कर, मारो वैरी पाँच ।
कह टेऊँ हरि भजन कर, मेटो जम की आँच।262।
काम करो हरि भजन का, मीत करो भगवान।
संत वचन संगी करो, टेऊँ हो कल्यान।263।

भक्ति अंग

भक्ति करनी कठिन है, करता है को सूर।
टेऊँ शिर साटे बिना, यह मंजिल है दूर।264।
भक्ति करनी जगत में, है सूरां का काम।
कह टेऊँ हरि भक्तिका, कायर लेह न नाम।265।

बड़ भागी भक्ति करे, कर न सके दुर्भाग।
टेऊँ तांते सर्व तज, हरि भक्ति में लाग।266।
भक्ति करनी कठिन है, सुगम न तांको जान।
टेऊँ भक्ति सो करे, त्यागे जो अभिमान।267।
मन चंचल के शान्ति हित, एक हरी का ध्यान।
टेऊँ हरि के ध्यान बिन, मिले न शान्ति सुजान।268।
कह टेऊँ हरि भक्ति है, सर्व सुखों की खान।
तांते हरि की भक्ति कर, पाओ सूख महान।269।
हरि से वृती जोड़िये, ले गुरु से उपदेश।
कह टेऊँ इस जोग से, लगे ने दूःख क्लेश।270।
टेऊँ सबमें हरि बसे, सब रहते हरि मांहि।
सब हरि सब ते रहत हरि, निशदिन सुमरो तांहि।271।
हरी नाम सुख सिंधु है, जो जन सुमरे तास।
कह टेऊँ दुइ लोक में, सो पावत सुख रास।272।
हरीनाम आनन्द निधि, कह टेऊँ जप ताहिं।
जांके जप ते हो सदा, आनन्द मन के माहिं।273।
हरि गुण जो नित गावहीं, सो पावत आनन्द।
कह टेऊँ तिन पाप हर, काटत जम के फंद।274।
हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय।
कह टेऊँ हरि भक्तिसे, हरि का दर्शन पाय।275।
हरिजन के पीछे फिरूं, सुन नारद यह गाथ।
कह टेऊँ निज भक्तके, सदा रहूँ मैं साथ।276।

भक्तों का दुःख देख के, लेता हरि अवतार।
युग युग में रक्षा करे, कह टेऊँ निर्धार।277।
हरि भक्तों को ना लगे, कबहूँ यम का दंड।
कह टेऊँ दुइ लोक में, पावत सूख अखंड।278।
मात पिता गौ देश पुन, देव गुरू भगवान।
षष्ट भक्ति से होत है, कह टेऊँ कल्यान।279।
निर्मानी निर्मोह पुन, निष्कामी निर आस।
कह टेऊँ इस जगत में, ऐसा को हरिदास।280।
आशा तृष्णा वासना, ममता विषय पछान।
ये नव नदियाँ तरत जो, सो नर हरि वपु जान।281।
हरि भक्त हरि गुन रटे, हरि बिन करे न बात।
कह टेऊँ हरि भक्ति बिन, मांगे न दूजी दात।282।
हरि भक्त सो जानिये, जो हरि जाप जपाय।
कह टेऊँ हरि जाप से, हरि से देत मिलाय।283।
हरि भक्त का चिन्ह यह, प्रसन्न मुख नित होय।
कह टेऊँ सुख दुःख विखे, चिंता करत न सोय।284।
हरिभक्त सब जगत को, जानत हरि स्वरूप।
टेऊँ सब को सूख दे, तांकी ऊप अनूप।285।
हरि भक्त हित करत है, सबका जगत मंझार।
कह टेऊँ स्वार्थ बिना, सदा करे उपकार।286।
हरिभक्त हरिभक्ति से, भावैं हरि मन माहिं।
कह टेऊँ हरि भक्तितज, और करत कुछ नाहिं।287।

हरिभक्त राजी रहे, हरि के भाणे माहिं।
कह टेऊँ मन में कभी, चिंता करते नाहिं।288।
हरीभक्त हरि भरवसे, रहता आठों याम।
टेऊँ तज हरि और की, लेत न कबहूँ शाम।289।
हरिभक्त के दरस ते, हरि आवत है याद।
कह टेऊँ दुःख दूर हों, मन में पुन अहिलाद।290।

सज्जन व दुर्जन लक्षण

हरि का सुमरन प्रेम से, करे करावे जोय।
कह टेऊँ इस जगत में, हरिजन कहिये सोय।291।
जांकी वृति अडोल है, डोलत ना भव मांहिं।
कह टेऊँ सब संत जन, कहते हरि वपु तांहिं।292।
हरि हृदय जिन जानिया, से हरि रूप पछान।
कह टेऊँ तां दरस ते, होत सर्व कल्यान।293।
हरिजन देखत सर्व को, एक हरि का रूप।
दुर्जन नाना दृष्टि कर, पड़त नर्क के कूप।294।
हरिजन हरि सत् जानते, दुर्जन जग सत् मान।
हरिजन वैकुण्ठ जात है, दुर्जन जग भरिमान।295।
हरि भक्तों की भावना, निश्चय पूरन होय।
कह टेऊँ सत् कहत हूँ, वृथा जात न सोय।296।
हरिजन हरते हैं सदा, अवगुन विषय विकार।
कह टेऊँ दुर्जन सदा, काम क्रोध उर धार।297।

हरिजन हिंसा ना करे, जान जीव हरि अंश।
कह टेऊँ धर द्वैत को, दुर्जन करत ध्वंस।298।
हरिजन दुर्जन ठौर इक, बैठ करत नहिं संग।
हरिजन सत्संग में रहे, दुर्जन जात कुसंग।299।
हरिजन हरि की सेव में, सदा रहत लिवलीन।
दुर्जन कर दुष्कर्म को, टेऊँ होवत दीन।300।
निर्गुन वपु परमात्मा, सगुन रूप है संत।
निर्गुण सरगुण एक है, टेऊँ ज्यों पट तंत।301।

सन्त के लक्षण

काम क्रोध को वश करे, साधु सो पहिचान।
कह टेऊँ हरि द्वार में, होवे सो परवान।302।
निष्ठा आतम ज्ञान में, रहत सदा निर्मान।
कह टेऊँ निर्द्वन्द्व जो, साधू सो पहिचान।303।
चाह चिन्त करते नहीं, मोह ममत जिहं नाहिं।
कह टेऊँ इस जगत में, साधू कहिये ताहिं।304।
कह टेऊँ पावन सदा, तन मन बानी जास।
समदरशी निर्मोह नित, साधू कहिये तास।305।
मोह नहीं ममता नहीं, नहिं जांको अभिमान।
कह टेऊँ तां संत पर, वारूं तन-मन प्रान।306।
पांच पांच तज पांच को, हरे तीन इक जीत।
कह टेऊँ सो संत है, जांकी हरि से प्रीत।307।

दुःख सुख में डोले नहीं, अचल अचल वत होय।
कह टेऊँ सो संत जन, सुख की सेजा सोय।308।
माया ममता मोह मद, मनमथ मन अरु मान।
जो जीते इन सात को, सो है संत सुजान।309।
जो माया वश होत नहिं, जो नहिं भोगत भोग।
टेऊँ सुमरे नाम नित, सोई संत अरोग।310।
बालक सम इस जगत में, विचरत संत सुजान।
कह टेऊँ दुःख द्वन्द्व सह, पावत पद निर्बान।311।
तीर्थ दो प्रकार का, चल पुन अचल पछान।
गंगा आदिक अचल है, चल है संत सुजान।312।
रहनी बिन तन भेष धर, संत न कहिये सोय।
कह टेऊँ सो संत है, रहनी रहता जोय।313।
भेद रहत निष्काम जो, चाहत ना निज मान।
कह टेऊँ इस जगत में, सोई संत पछान।314।
जांकी दृष्टि सम रहे, सो समदरशी जान।
कह टेऊँ तां पुरुष को, कहते संत सुजान।315।

सन्त व ज्ञानी महिमा

जीव जगत के जरत हैं, निशदिन चिंता आग।
कह टेऊँ चिन्ता बिना, संत सुखी हरि लाग।316।
निर्दोषी जे संत जन, से हरि मूरत मान।
टेऊँ तिन के दरस ते, पापन की हो हान।317।

संतन हरि को खोज के, पाया हृदय माहिं।
मूरख बाहर ढूंढते, टेऊँ मिलत न तांहि।318।
मूरख के मन में बसे, काम क्रोध मद मोह।
कह टेऊँ शुद्ध संत जन, जामे दंभ न द्रोह।319।
जैसा सुख है संत को, कह टेऊँ मन माहिं।
तैसा सुख सुर किन्नर गण, गन्धर्व पावे नाहिं।320।
टेऊँ पारस और को, करत न आप समान ।
साधू दीपक भृंग ज्यों, निज सम करते आन।321।
अमर देश में संत जन, नित ही करत निवास।
कह टेऊँ करते नहीं, काल कर्म जिहं वास।322।
मनोनाश क्षय वासना, होय ब्रह्म का ज्ञान।
कह टेऊँ उस पुरुष को, जीवन मुक्ता जान।323।
टेऊँ ब्रह्मानन्द में, जांका मन लय होय।
ऐसे ज्ञानी पुरुष को, दुःख नहिं भासत कोय ।324।
ज्ञानी की क्रिया सभी, पुण्य रूप है तात।
जहं बैठत हरि धाम सो, जाप रूप तिंह बात।325।
तांका शयन समाधि है, देखन हरि दीदार।
टेऊँ पूजन ब्रह्म का, जो जो करत विहार।326।
नास्तिक माने लोक यह, आस्तिक दोनों लोक।
ज्ञानी मानत ब्रह्म को, जाहिं न दोनों थोक।327।
काम क्रोध मद मोह पुन, मत्सर से जो हीन।
कह टेऊँ इस जगत में, ज्ञानी सो प्रबीन।328।

पांचो मुदरा योग की, खेचर आदी जान।
कह टेऊँ जो सिधि करे, योगी तांहि पछान ।329।
पर उपकारी जगत में, है इक संत सुजान।
कह टेऊँ नित देत है, सबको भक्ति ज्ञान ।330।
संत हरी गुरुदेव बिन, किसका हो न उद्धार।
कह टेऊँ इस बात को, कहते वेद पुकार ।331।
सब स्वारथ के मीत हैं, बिन स्वारथ है संत।
कह टेऊँ तिहँ सेव से, राजी हो भगवंत ।332।
संत जनों की सेव से, पूरन होवे आस।
कह टेऊँ ऋद्धि सिद्धि मिले, विपत्त विघ्न हो नास ।333।
जो संतन को सेवता, सो भगवत मन भाय।
कह टेऊँ हरि संत इक, वेद ग्रंथ यों गाय ।334।
जो सेवत है संत को, पुण्य कर्म सो लेत।
कह टेऊँ कर संत की, सेवा होय सचेत ।335।
संतन चरन पधारिया, दया करे मम धाम।
कह टेऊँ पूरन भये, आज हमारे काम ।336।
संतों की सेवा करो, धर हृदय अनुराग।
कह टेऊँ संसार में, हो जावो बड़ भाग ।337।
सब जन के हित होत है, संतों का उपदेश।
श्रद्धा से जो सुनत है, तांका मिटे क्लेश ।338।
बादल के सम संत है, वचन जान बरसात।
कह टेऊँ नित पान कर, चात्रक के सम तात ।339।

टेऊँ श्रद्धा प्रेम से, सुन संतन इतिहास।
हरि भक्तों के गाय गुण, हिरदे पाय हुलास ।340।

सत्संग

टेऊँ जेते कर्म शुभ, लिखे वेद के मांहि।
साधू संग गुरु नाम सम, और कर्म को नाहिं ।341।
कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग।
कह टेऊँ इनके किये, होवे भव दुःख भंग ।342।
श्रद्धा से सत्संग कर, सेव करो निष्काम।
कह टेऊँ तेरे सभी, होवे पूरण काम ।343।
पूरब पुण्य से मिलत है, संतो का सत्संग।
कह टेऊँ जिहं सेवते, मिट हैं मस्तक अंग ।344।
संत सदा सच बोलते, झूठ कहत कब नाहिं।
कह टेऊँ निश्चय करो, तुम अपने मन मांहि ।345।
कह टेऊँ इस जगत में, जो चाहो आराम।
साधु संग नित ही करो, सुमरो हरि का नाम ।346।
कह टेऊँ इस जगत में, जे चाहो तुम सूख।
संतों का सत्संग सुन, देहि न किसको दूःख ।347।
देव नदी सम साधु संग, जल हरि नाम पछान।
कह टेऊँ जो नावहीं, हो तिहं पापन हान ।348।
साधु संग है कल्पतरु, बैठो छाया तास।
कह टेऊँ छोड़ो नहीं, पूरन होवे आस ।349।

गंगा पाप शशि ताप हर, हरे कल्पतरु दीन।
पाप ताप पुन दीनता, हरत साधु संग तीन।350।
चिन्तामणि अरु कामधैन, तीजा सुरतरु जान।
जगत पदारथ देत ये, सत्संग दे निज ज्ञान।351।
बेपरवाही कीर्ती, हरि दर्शन पुन शांति।
चारों सत्संग से मिले, कह टेऊँ तज भ्रांति।352।
नदी बगीचा शैल पुन, चौथा सत्संग जान।
कह टेऊँ चित शांति हित, सत्संग है प्रधान।353।
कह टेऊँ संसार में, ये षट दुर्लभ जान।
सत्संग सत्गुरु ध्यान पुन, त्याग विराग विज्ञान।354।
सब संतों ने बैठ के, कीना यह वीचार।
कह टेऊँ सत्संग सम, साधन नहिं को सार।355।
जगत शोक में जीव बहु, रोवत है दिन रैन।
कह टेऊँ सत्गुरु कहो, कैसे पावे चैन।356।
संत वेद गुरु वाक्य पुन, प्रारब्ध भगवान।
कह टेऊँ तिन भाव से, छूटे शोक महान।357।
कह टेऊँ सत्संग से, मूरख भये सुजान।
काम क्रोध मद मोह तज, कीना निज कल्यान।358।
साधु संग सरवर विखे, हंस मुमुक्षु जात।
कह टेऊँ मोती वचन, चुन चुन नित ही खात।359।
साधु संग से तरत है, कलियुग में नर नार।
कह टेऊँ सत्संग कर, मन में श्रद्धा धार।360।

सत्संग तीर्थ रूप है, सत्संग मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ तज कुसंग को, सत्संग कर निर्धार ।361।
सत्संग से निःसंग हो, निःसंग से निर्मोह।
कह टेऊँ निर्मोह से, मुक्ति मिले पुन तोहि ।362।
निशवासर सत्संग कर, देत सुमति सत्संग।
कह टेऊँ तज कुसंग को, जांसे हो मति भंग ।363।
कह टेऊँ सत्संग से, मिलत पदारथ चार।
तांते तुम सत्संग कर, निश्चय मन में धार ।364।
कह टेऊँ तरना चहो, भव सागर से मीत।
नित प्रति तुम सत्संग कर, धारे मन प्रतीत ।365।
दुर्जन का संग त्याग के, करो सदा सत्संग।
कह टेऊँ दुर्जन बुरा, मारत अहि जिम डंग ।366।
मानुष तन को पाइ के, सत्संग से चित्त लाय।
कह टेऊँ तेरे निकट, काल कभी नहिं आय ।367।
कह टेऊँ नित नेम से, सत्संग में जो जाय।
संतन के प्रसाद से, सो जन मुक्ति पाय ।368।
संतों के सत् वचन सुन, जो जन करत विचार।
कह टेऊँ भव सिन्धु से, सो जन उतरत पार ।369।
टेऊँ सत्संग कोट में, रहिये आठों याम।
चोर विकार न लूटहीं, ज्ञान ध्यान गुण दाम ।370।
साध संग में जाइये, चिन्ता घर की छोड़।
कह टेऊँ सत् वचन में, दीजे मन को जोड़ ।371।

साध संगति में बैठ तुम, आसन मार अडोल।
कह टेऊँ मन कान दे, सुनिये वचन अमोल ।372।
कह टेऊँ संसार में, संतों का कर संग।
संतों के सत्संग में, लागत आतम रंग ।373।
सत्संग में जा सेव कर, होय सदा निर्मान।
कह टेऊँ चित्त विमल कर, पावो आतम ज्ञान ।374।
करना क्या है जगत में, पाये मानुष देह।
कह टेऊँ सत्संग में, संतों से सुन लेह ।375।
साध संग में आय जो, कथा सुने दे कान।
कह टेऊँ तां पुरुष के, मन में उपजे ज्ञान ।376।
कह टेऊँ हरि की कथा, पापिन को नहिं भाय।
निन्दा चुगली पाप नित, तांको बहुत सुहाय ।377।
कथा कीर्तन भजन से, जो जन राखत प्यार।
कह टेऊँ तां पुरुष को, सब जग करत जुहार ।378।
कथा कीर्तन सुनत हीं, छूटहिं जिसके प्रान।
कह टेऊँ धन जन्म तिस, होवे सो परवान ।379।
कथा कीर्तन भजन है, भव सागर में सेत।
कह टेऊँ सो पार हो, जो जन राखत हेत ।380।
कथा कीर्तन भजन में, जो जन करत बिगाड़।
कह टेऊँ तिस जीव का, कबहुँ न होत उद्धार ।381।
सत्संग में निद्रा करे, सुने न वचन विलास।
कह टेऊँ तिस मनुष्य को, होय न ज्ञान प्रकाश ।382।

सत्संग में निद्रा करे, मंद भागी सो जान।
कह टेऊँ तिस मनुष को, होय न कबहूँ ज्ञान ।383।
वचन न माने संत का, मन में राख गुमान।
कह टेऊँ पछताएंगे, जब हो सूकर स्वान ।384।
वचन न माने संत का, सो नर है दुर्भाग।
कह टेऊँ तिस पुरुष को, राम रंग नहिं लाग ।385।
वचन न माने संत का, सो नीचों ते नीच।
होय दुःखी इस लोक में, पड़े नरक के कीच ।386।
संत वेद गुरु देव का, वचन न सुनता जोय।
कह टेऊँ सो जगत में, मरकर बौरा होय ।387।
वचन षष्ट प्रकार का, कहते संत सुजान।
कह टेऊँ लख मरम जो, पावे सो नर ज्ञान ।388।
सुत सो सेवे मात पित, धन सो दीजे दान।
आयु सा सत्संग जा, कह टेऊँ सत् मान ।389।
संत समागम तब मिले, जबहीं जागे भाग।
कह टेऊँ सत्संग बिन, होय न हरि अनुराग ।390।
संत वहां सुख से रहे, जहं हो चार जकार।
जंगल जिज्ञासा जगा, चतुरथ जल की धार ।391।

प्रेम

कह टेऊँ मैं देखिया, करके मनहिं विवेक।
सब साधन का मूल है, प्रेम प्रभु का एक ।392।

प्रेम जगत में बहुत है, प्रेम बिना नहिं कोय।
टेऊँ साचा प्रेम सो, जो हरि हीं से होय।393।

धन विद्या गुण रूप बल, भावत ना भगवान।
टेऊँ हरि को भावहीं, प्रेम एक प्रधान।394।

प्रीतम का जहं प्रेम है, प्रीतम है तिंह ठौर।
कह टेऊँ बिन प्रेम के, रहत न सो थल और।395।

प्रेम जहां तहं एकता, तहां सदा सुख शान्ति।
कह टेऊँ जहं शान्ति है, वहां दान्ति अरु कान्ति।396।

प्रेम बिना ना हरि मिले, तपस्या बिन नहिं राज।
त्याग बिना ना मिलत है, कह टेऊँ स्वराज।397।

प्रेम जिसे सो मनुष है, प्रेम बिना पशु जान।
तांते सबसे प्रेम कर, टेऊँ दे सन्मान।398।

प्रेम उभय प्रकार का, कह टेऊँ तुम जानि।
जगत प्रेम दुःख रूप है, प्रभू प्रेम सुख खानि।399।

करमा कुबजा भीलनी, हाथी अरु हनुमान।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।400।

टेऊँ हरि को भावते, केवल मन का प्रेम।
जानो मन के प्रेम बिन, सूने जपतप नेम।401।

कह टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा है अधिकाय।
प्रेम भरे परवाह में, ज्ञान ध्यान बह जाय।402।

प्रेम तीन प्रकार का, कह टेऊँ जग जान।
देखा देखी स्वार्थी, तीजा मन का मान।403।

देखा देखी स्वार्थी, दोनों हैं बेकाम।
केवल मन के प्रेम से, टेऊँ रीझत राम।404।
प्रेम उत्तम सो जानिये, दूज चन्द्र सा होय।
कह टेऊँ कब ना घटे, दिन दिन बाढ़े जोय।405।
साची प्रीति पय नीर की, मिलत एक हो जाय।
कह टेऊँ इक भाव में, दोनों जात बिकाय।406।
जल में रहते जीव बहु, जल का कदर न जान।
कह टेऊँ इक मीन ही, जल का कदर पछान।407।
पहले प्रीति करन से, सीख निभावन रीति।
टेऊँ जल से मीन ज्यों, मरत निभावत प्रीति।408।
ऐसी प्रीति न कीजिये, ज्यों कुसुम्ब का रंग।
कह टेऊँ थिर ना रहे, देख प्रत्यक्ष प्रसंग।409।
टेऊँ ऐसी प्रीति कर, ज्यों मंजीठ का रंग।
जो वस्त्र गल जाय तो, रंग न छोड़त संग।410।
कह टेऊँ गुरुदेव से, साची प्रीति लगाय।
लाकर तोड़ निभाइये, नातर नेह न लाय।411।
पहले प्रीति लगाय के, पीछे तोड़त जोय।
कह टेऊँ इस जगत में, अपयश पावत सोय।412।
सारस खग युग की लखो, प्रीति सची जग माहिं।
कह टेऊँ इक के मरे, दूजा जीवत नाहिं।413।
व्रत नेम सबको करे, तीरथ जपतप याग।
नेह निभावत एक रस, टेऊँ को बड़ भाग।414।

लगन लगी जब राम से, क्या लोकन से काम।
टेऊँ मोहि न भावहीं, खान पान आराम।415।

विरह

ज्यों घन से रति मोर की, चन्द से प्रीति चकोर।
त्यों टेऊँ गुरुदेव की, प्यास लगी है मोर।416।
ज्यों चकवी चकवे बिना, तड़फत सारी रात।
कह टेऊँ त्यों गुरु बिना, नैनें नींद न आत।417।
जैसे भंवरा फूल को, चाहत है दिन रैन।
टेऊँ त्यों गुरुदेव का, दर्शन चाहत नैन।418।
चात्रक को ज्यो स्वांति की, है रति बारह मास।
कह टेऊँ गुरु दरस की, त्यों मेरे मन प्यास।419।
दर्शन बिन गुरुदेव के, मन में उपजी पीर।
टेऊँ कुछ भावे नहीं, दुर्बल भया शरीर।420।
ज्यों निर्धन धन बिन दुःखी, दुःखी नीर बिन मीन।
कह टेऊँ त्यों गुरु बिना, मैं हूँ दुखिया दीन।421।
आज विरह के सर्प ने, मुझको मारा डंग।
कह टेऊँ उतरे नहीं, बिन सत्गुरु के संग।422।
एक घड़ी आवत नहीं, सत्गुरु तुम बिन चैन।
कह टेऊँ गुरु दरस दे, करले ठंडे नैन।423।
टेऊँ जिसके मिलन की, लगन होय मन माहिं।
निश्चय सोई मिलत है, विलम्ब होत कछु नाहिं।424।

सोना और जागना

बहुत जनम तुम सोय के, देखा दूःख महान।
कह टेऊँ अब जागके, पाओ सूख निधान।425।
जागन बिन नहिं मिलत है, जगतपति जगदीश।
टेऊँ तांते जागले, मिलन चहो जो ईश।426।
माया तांको मोहहीं, जो अविद्या में सोय।
टेऊँ अहिविष तां चढ़े, नींद करे नर जोय।427।
टेऊँ गफलत नींद तज, देखो अपना आप।
जिस देखन से जगत के, मिटहिं पाप संताप।428।
टेऊँ गफलत नींद में, बीते जन्म अनेक।
मनुष्य जन्म को पाय तुम, तजी न सोवन टेक।429।
मात गर्भ में सोय पुन, सोये मां के गोद।
यौवन में तिय संग पुन, सोकर कीन विनोद।430।
बुढ़ापन में खाट पर, सोय रहियो दिन रैन।
चढ़ अर्थी पर अंत में, कीन चिक्षा पर शैन।431।
सोवत सोवत खोय दी, टेऊँ मानुष देह।
हाथ मले बिन हाथ में, आवत हाथ न एह।432।
टेऊँ तांते रैन दिन, नींद तजे तुम जाग।
राम भजन कर ध्यान धर, पाओ सूख सुहाग।433।
तस्कर तांको लूटते, जांको निद्रा घोर।
कह टेऊँ तुम जागले, कबहुँ न लूटे चोर।434।

सोये नहिं किस पाइयां, जिन पाया तिन जाग।
टेऊँ हरि पाना चहो, नैनें निद्रा त्याग।435।

सावधान हो रैन दिन, टेऊँ धर हरि ध्यान।
आतम का चिंतन करे, पाओ पद निर्वान।436।

कह टेऊँ सो जागता, जांको आतम ज्ञान।
सोया सो पहचानिये, जाँके उर अज्ञान।437।

ब्रह्मा विष्णु महेश अरु, गौरी गणपति भान।
कह टेऊँ सब जागके, करत ब्रह्म का ध्यान।438।

सुर नर गन्धर्व किन्नर गण, ऋषि मुनि गुणवान।
टेऊँ जागी प्रातः को, भजन करत भगवान।439।

जोगी करते जोग को, वेद पढ़त विद्वान।
टेऊँ प्रातः भक्त जन, करत हरि गुण गान।440।

जागत प्रातःकाल जो, रहत निरोगी सोय।
टेऊँ तांते जागिये, दूःख न लागे कोय।441।

टेऊँ होवे संत सो, प्रातः जागत जोय।
जो नहिं जागत प्रातः को, संत न होवत सोय।442।

प्रातःकाल को जागके, सुमरे जो गुरुनाम।
कह टेऊँ तिस मनुष्य की, मिटे कल्पना काम।443।

प्रातःकाल स्नान कर, जो देता है दान।
कह टेऊँ पुन हरि भजे, तांका हो कल्यान।444।

जो नर प्रातः न जागहीं, सो पीछे पछुताय।
टेऊँ तांते जागिये, गफलत नींद गंवाय।445।

प्रातःकाल जो सोवहीं, तां मन होय मलीन।
रोग बढ़े आयू घटे, होय भाग से हीन ।446।
प्रातः पशु पंछी जगे, सोवत एक स्वान।
टेऊँ सोवत प्रातः जो, सो नर स्वान समान ।447।
टेऊँ अमृत वेल में, चेतन करके जीउ।
आंख कान मुख मूंद के, नाम अमर रस पीउ ।448।
नाम जाप जो होय नहिं, शास्त्र का पढ़ पाठ।
टेऊँ मन निश्चल करो, तज कर माया ठाठ ।449।
वेद पाठ जो होय नहिं, उठ बैठो कर मौन।
कह टेऊँ सोवो नहीं, जे सुख चाहो भौन ।450।
टेऊँ प्रातः ऊठ कर, कीजे शौच स्नान।
निश्चल मन से लाइये, सहज समाधि सुजान ।451।
सहज समाधि न होय तो, कीजे प्राणायाम।
कह टेऊँ जिससे मिले, तन मन को आराम ।452।
प्राणायाम जो होय नहिं, सुमरन कंठ करेह।
टेऊँ कंठ न होय तो, जिह्वा से जप लेह ।453।
सुमरन संध्योपासना, पुन पढ़ गीता पाठ।
टेऊँ गफलत छोड़कर, जागो पाहर आठ ।454।
आठ पहर जो होय नहिं, चार पहर भज राम।
चार पहर संसार के, कह टेऊँ कर काम ।455।
चार पहर जो होय नहिं, तो फिर करिये दोय।
कह टेऊँ हरि भजन से, सदा सुखी तुम होय ।456।

दो पाहर ना हो सके, तो कर पाहर एक।
प्रातःकाल को ऊठ कर, सुमरो हरि सविवेक ।457।

मनुष्य देह के कर्तव्य

मुक्तद्वारा मनुष्य तन, पाया पूरब भाग।
कह टेऊँ पा मुक्ति को, गुरु चरनों मे लाग ।458।
इक इक अंग बहु मोल है, तोहि दिया करतार।
कह टेऊँ हरि भजन कर, मिलहिं न दूजी बार ।459।
जोनि चौरासी कोट में, मानुष तन है द्वार।
कह टेऊँ तज जगत को, पाओ हरि दीदार ।460।
सर्व तीरथ सब देव मय, ज्ञान ध्यान गुण गेह।
पाकर ऐसा मनुष तन, हरि सुमरन कर लेह ।461।
तेरे हित पैदा किया, हरि ने सकल जहान।
कह टेऊँ तुमको रचा, भक्ति हेत भगवान ।462।
मानुष तन को पाय के, किया न सुंदर काज।
टेऊँ गंवाया पाप में, तोहि न आई लाज ।463।
शुभ अवसर यह मनुष तन, मिला भाग से तोहि।
फंस कर माया मोह में, टेऊँ तां मत खोय ।464।
मानुष तन को पाय जिंह, किया न पर उपकार।
टेऊँ वृथा जन्म तिंह, कहते संत पुकार ।465।
मानुष तन को पाय जिंह, गुरु से लिया न ज्ञान।
कह टेऊँ धिक जन्म तिंह, कहते संत सुजान ।466।

चौरासी लख जोनि फिर, पायी दुर्लभ देह।
कह टेऊँ हरि भजन से, सफली करले एह।467।
मानुष तन को पाय जिस, लखा न आतम राम।
कह टेऊँ तिस जीव का, जीवन है बेकाम।468।
या तो आतम ज्ञान हो, या हो पर उपकार।
टेऊँ जिसमें ये नहीं, मानुष सो बेकार।469।
भोगों में चित लाइके, हीरा जन्म न हार।
कह टेऊँ कछु समझ ले, हरी नाम उर धार।470।
कह टेऊँ इस देह में, स्वास अमोलक जान।
नील पदम दे ना मिले, व्यर्थ ताहिं न हान।471।
अंतर बाहर एक रस, किशमिश के सम होय।
मीठा कोमल सरल जो, मानुष कहिये सोय।472।
जिस मानुष ने ना किया, इन्द्रिय मन आधीन।
कह टेऊँ सो जगत में, होत दीन ते दीन।473।
पूरब पुण्य प्रताप ते, पाई मानुष देह।
कह टेऊँ हरि मिलन का, अवसर जानो एह।474।
शुभ श्रवण से जानिये, जे सुन हैं हरि गाथ।
हरि गुरु चरने जो निवे, सो सुंदर है माथ।475।
सुंदर नेत्र जान से, जो हरि दर्शन देख।
कह टेऊँ जा हरि जपे, जीभ उत्तम सा लेख।476।
पवित्र सेई पाद है, जे सत्संग चल जाय।
कह टेऊँ कर उत्तम से, सेवा दान कमाय।477।

उदर

हरि ने देके आन अंग, कीना बड़ उपकार।
कह टेऊँ इक पेट दे, दुखी किया संसार।478।
टेऊँ सबको पेट दे, ठग लीना करतार।
बिना पेट है आप इक, करत न चिन्त अहार।479।
वापी कूप तड़ाग सर, इकदिन सब भर जात।
टेऊँ पापी पेट इक, भरत नहीं दिन रात।480।
बड़े बड़े बलवीर नर, राक्षस पशु महान।
टेऊँ जीते पेट ने, पेट बड़ा बलवान।481।
टेऊँ सबको रैन दिन, पेट करावत पाप।
जो नहिं होता पेट यह, कौन सहत संताप।482।
पेट काज सब जीव ही, सहन करत कटुबैन।
कह टेऊँ दुःख द्वन्द्व सह, पावत कभी न चैन।483।
पेट न होता पिंड में, कौन होत नर दीन।
कह टेऊँ हरि भजन कर, होत हरि में लीन।484।
ऊठ नींद से कहत सब, हम भूखे निर्धार।
कह टेऊँ सब पेट हित, यत्न करत हरवार।485।

भगवान पर भरोसा

टेऊँ चिन्ता पेट की, मत कीजे तुम तात।
पेट बनावन हार हरि, पेट भरत दिन रात।486।
मात गर्भ में नाभ से, पोषत प्रभु प्रबीन।
टेऊँ अब भी देत सो, काहिं होत नर दीन।487।

टेऊँ जल थल व्योम में, सब को दे हरि एक।
और न कोई देत है, कर के देख विवेक।488।
जितना जांका पेट है, उतना सबको देत।
कह टेऊँ त्रिलोक को, पालत हरि धर चेत।489।
हाथी को मन देत है, निश बासर रघुराज।
कह टेऊँ क्या दे नहीं, तुमको सेर अनाज।490।
जैसा जिसका खान है, तैसा देत अहार।
टेऊँ किस छोड़त नहीं, है प्रभु पालनहार।491।
नाम विश्वम्भर राम का, प्रगट जगत मंझार।
टेऊँ जल थल में वही, सबकी करत संभार।492।
मेरी मति यह मानले, धर विश्वास सुजान।
कह टेऊँ चिंता तजे, धरो हरी का ध्यान।493।
साहिब का दर छोड़ के, और द्वार जे जात।
कह टेऊँ ते मूंढ नर, कबहूं नांहि अघात।494।
राखो हरि की आस इक, जग की आस निवार।
जग आसा दुःख देत है, हरि आसा सुखकार।495।
टेऊँ भरवसे राम के, पूरन हो सब काम।
कष्ट विघ्न दुःख दूर हो, मन में हो आराम।496।
टेऊँ जो कुछ चहत हो, सो हरि से मंग लेह।
मांग नहीं कुछ और से, सुन शिक्षा मम एह।497।

सहनशीलता व धैर्य

धीरज को मन में धरो, धीरज सुख की खान।
धीर धरे जो विपति में, टेऊँ सो बुद्धिमान।498।
कह टेऊँ घबराय मत, धीरज से कर काम।
धीर उदार गंभीर मति, पावत है आराम।499।
विपति पड़े धीरज धरे, दुश्मन आदर देह।
कह टेऊँ जो गुण गहे, बुद्धि जन तां लखि लेह।500।
सहन शक्ति को धार कर, चित में शान्ती पाय।
कह टेऊँ चित शांति से, सहज मुक्तिहो जाय।501।
सहन शक्ति को धार कर, सबसे करले प्यार।
नम्र दृष्टि नित कीजिये, हरिये क्रोध विकार।502।
निज को छोटा मान के, सब को दे सन्मान।
सहन शीलता धार मन, टेऊँ पा कल्यान।503।
टेऊँ धरनी सर्व को, देत यही उपदेश।
सहन करे जो मोहि सम, जानो तिंह दरवेश।504।
शीत वात जो सहत नहिं, सहत नहीं कटु बैन।
कह टेऊँ उस मनुष्य का, चित नहिं पावत चैन।505।
बिन तितिक्षा नर पाय नहिं, टेऊँ यश सुख मान।
कर्म धर्म धन सम्पति, ज्ञान ध्यान विज्ञान।506।
जो तुम थोरा कष्ट भी, सह न सकत हो चीत।
तो तुम क्यों दुःख अंत का, सह साकोगे मीत।507।

कह टेऊँ तांते तजो, तुच्छ सुख की तुम आस।
तितिक्षा से दुःख सहन कर, पाओ नित्य सुखरास।508।
टेऊँ दुःख है परम गुरु, सब कुछ देत सिखाय।
विनय वीरता धीरता, दे हरि साथ मिलाय।509।
कह टेऊँ जे जगत में, सहत कष्ट ते कष्ट।
ते नर उत्तम होत है, जड़ चेतन के इष्ट।510।
बल बुद्धि मन पुन धैर्य की, दूःख परीक्षा लेत।
कह टेऊँ सब पाप हर, पुनि पावन कर देत।511।
कंगी केसर लेखनी, कागद मैंदी पान।
अंजन स्याही दूःख सह, टेऊँ भये प्रधान।512।
सूख जगत को भावहीं, दुःख भावत है संत।
टेऊँ दुःख जिहं भावहीं, भावे सो भगवंत।513।
जो जन दुःख में हो दुःखी, सुख में सुख को मान।
कह टेऊँ संसार में, सो नर अधम पछान।514।
जो जन सुख में हो दुःखी, दुःख में सुख जिंह होय।
टेऊँ उत्तम मनुष्य पुन, साधक जानो सोय।515।
सुख दुःख में सम रहत जो, तांको ज्ञानी जान।
सुख दुःख जिंह भासत नहीं, टेऊँ सो भगवान।516।
कह टेऊँ जे सुख चहो, धारो गुण ये चार।
मधुर वचन, निर्मानता, सहनशील, वीचार।517।

क्षमा व जीवित मरना

टेऊँ क्रोध न कीजिये, मन में शांती धार।
शांति से सुख होत है, पाप ताप प्रहार।518।

खिमिया खफनी पहन के, शोभा पावत संत।
कह टेऊँ तज क्रोध को, पाया मोद अनन्त।519।
खिमिया जांके मन बसे, सो देवन का देव।
कह टेऊँ तिस पुरुष की, सब जन करते सेव।520।
खिमिया जांके मन बसे, सो सबका सिरमोर।
कह टेऊँ तां पुरुष को, वंदत सब कर जोड़।521।
खिमिया जांके मन बसे, तांके हो सब मीत।
कह टेऊँ तां दरस ते, प्रसन्न होवै चीत।522।
खिमिया जांके मन बसे, मैं हूँ तांका दास।
कह टेऊँ तां संग से, होवै क्रोध विनास।523।
खिमिया जांके मन बसे, तांको अति आनंद।
कह टेऊँ तिस पुरुष को, मेरी हो नित वंद।524।
जीव भाव से जो मरे, सो है ब्रह्म स्वरूप।
कह टेऊँ फिर ना मरे, कहते मुनिवर भूप।525।
जीते जो मर जीवहीं, तांहि न भासत खेद।
निज आनंद में मगन हो, टेऊँ भाखत वेद।526।
जीवत मृतक हो रहे, मरकर जीवत जोय।
कह टेऊँ तां पुरुष को, काल न व्यापे कोय।527।
जीते ही जो जन मरे, तांहि न मारे काल।
कह टेऊँ सो अमर हो, सब को करत निहाल।528।
जीते ही मर जात जो, सो है पूरा संत।
कह टेऊँ तांका चहै, दरस आप भगवंत।529।

जीते मृतक जान सो, हर्ष शोक जिंह नाहिं।
कह टेऊँ संसार में, राम रूप लख ताहिं।530।

जीते जग में जो मरे, सो जन हैं को एक।
टेऊँ हो वश काल के, मरते जीव अनेक।531।

मन

मन का जीतन पुण्य है, मन से हारन पाप।
टेऊँ मन को जीत के, दूर करो संताप।532।

जो मन जीते आपना, जग को जीते सोय।
टेऊँ मन जीते बिना, हरि दर्शन ना होय।533।

रण में जीते शत्रु को, शूरा सो नहिं जान।
कह टेऊँ मन जीत जो, शूरा तांहि पछान।534।

मन सुख दुःख का मूल है, टेऊँ करत बखान।
चंचल मन दुःख देत है, निश्चल मन सुखखान।535।

मन ही से सुख होत है, मन ही से दुःख होय।
कह टेऊँ इस मरम को, विरला जाने कोय।536।

टेऊँ मन दो भांति का, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप।
शुद्ध मिलावे राम से, अशुद्ध डार भव कूप।537।

सिंधु तरन अगिनी बखन, सुगम उलंघना मेरु।
कह टेऊँ पर कठिन है, मन का रोकन फेरु।538।

जग में बैरी तीन बड़, मन माया पुन वाम।
जो जीते इन तीन को, कह टेऊँ सो राम।।539।

मन मैला मत कीजिये, जे तन मैला होय।
मन मैले में हानि बहु, तन मैले कछु जोय।540।
तब लग मन चंचल रहे, जब लग होय न ज्ञान।
ज्ञान भये मन शान्ति हो, टेऊँ कहत सुजान।541।
मन हस्ती को वश करो, मार कुण्ढा गुरु ज्ञान।
ज्ञान बिना वश होत नहिं, टेऊँ मन मस्तान।542।
मन के गुन अवगुन सभी, लिखले कागद बीच।
बैठ अकेला सोच कर, तजले अवगुन कीच।543।
करत कृपा जब ईश तब, देखत मन निज दोष।
कह टेऊँ तज दोष को, धारत मन संतोष।544।
कह टेऊँ कब ना करो, इस मन पर विश्वास।
देखत सुन्दर विषय को, वेग करत मन आस।545।
कह टेऊँ समुझाय ले, अपने मन को नीत।
बाहरमुखता छोड़कर, आतम में धर चीत।546।
झगड़ा किससे ना करो, सबसे कीजे प्रीत।
कह टेऊँ तज क्रोध को, अपने मन को जीत।547।
तन को उज्वल राख जो, मन में मल की खान।
कह टेऊँ तिस मनुष से, काक भला कर जान।548।
कायिक वाचिक मानसिक, पवित्रता जिंह होय।
आयू बुद्धि बल यश बढ़े, दूःख न पावे सोय।549।
टेऊँ मन के दोष को, देखत जो नर नीत।
सो नर दोष त्याग कर, होवत परम पुनीत।550।

मन शुद्ध हो वीचार से, तन शुद्ध जल से होय।
कह टेऊँ मल ना रहे, साधन साधे दोय।551।

पवित्र तन के होत ही, मिट जाती है व्याधि।
कह टेऊँ मन शुद्ध विषे, होत न कभी उपाधि।552।

निश्चल निर्मल मन बिना, होय न आतम ज्ञान।
टेऊँ आतम ज्ञान बिन, होय न कब कल्यान।553।

ब्रह्मचर्य

टेऊँ तपस्या तप नहीं, ब्रह्मचर्य तप जान।
ऊर्ध रेत जो जगत में, सो नर देव समान।554।

ब्रह्मचर्य की धारणा, देत पदार्थ चार।
टेऊँ तांते यत्न से, ब्रह्मचर्य को धार।555।

एकहि साधे ब्रह्मचर्य, सब साधन सिद्ध होय।
ब्रह्मचर्य बिन जगत में, खड़े खड़े नर रोय।556।

ब्रह्मचर्य तप साधके, वेद पढ़त जे तात।
कठिन काम तिंह नाहिं को, भवसिंधु भी तरजात।557।

ब्रह्मचर्य जो पालते, विश्व ताहिं वश होय।
टेऊँ ऐसे रतन को, वृथा तुम मत खोय।558।

टेऊँ ऋद्धि सिद्धि वीरता, भक्ति मुक्ति पुन योग।
ब्रह्मचर्य से पावहीं, योगी ज्ञानी लोग।559।

जय भूती धन धर्म यश, पूरन वय आरोग।
ब्रह्मचर्य से होत है, इन सबका संयोग।560।

चमक दमक उत्साह बल, आनन्द औज अपार।
ब्रह्मचर्य से होत है, कह टेऊँ निर्धार ।561।
टेऊँ ब्रह्मानन्द का, ब्रह्मचर्य है मूल।
मूल गंवाये विषय में, मनुष्य सहत बहु शूल ।562।
ब्रह्मचर्य के पात से, होवत पात शरीर।
कह टेऊँ मन शोक हो, धरत नहीं कछु धीर ।563।
ब्रह्मचर्य के खिसत ही, नाशत मन बुद्धि गात।
कह टेऊँ जिम तेल के, घटे दीप बुझ जात ।564।
ब्रह्मचर्य को धार कर, भीषम पाया मान।
कह टेऊँ तिहं नाश कर, दूःख न पाय अजान ।565।
जोभन में जो बिन्दु को, राखत है सो वीर।
कह टेऊँ सो होत है, ज्ञानी गुणी गम्भीर ।566।
शील लंगोटा खैंचिके, बांधो तुम दिन रैन।
ब्रह्मचर्य को धार कर, कह टेऊँ पा चैन ।567।
टेऊँ अजपा जाप जप, धर गुरु चरनन ध्यान।
मातृमय सब नारि लख, जीतो मदन महान ।568।
टेऊँ देखत नार को, नम्न दृष्टि कर लेह।
ब्रह्मचर्य के धरन का, है जग साधन एह ।569।
मैथुन आठ प्रकार का, कह टेऊँ जग जान।
आठों से उपराम जो, ब्रह्मचारी सो मान ।570।
काया मन अरु वाच से, जाग्रत स्वपने माहिं।
टेऊँ भोगत भोग नहिं, ब्रह्मचारी कह ताहिं ।571।

रस स्पर्श के विषय में, कह टेऊँ मत भूल।
ब्रह्मचर्य को नाश कर, डार न शिर पर धूल।572।

भोजन विधि

सात्विक स्वल्प नेम से, जो जन करत आहार।
तांको रोग न लागहीं, टेऊँ देह मंझार।573।
काम क्रोध मद मोह से, चहत मुक्ति जो मीत।
थोरा भोजन खाय के, कर जिह्वा पर जीत।574।
जिह्वा जीते होत है, मन इन्द्रियों पर जीत।
कह टेऊँ सत् बात यह, राखो मन प्रतीत।575।
रसना रस से होत है, टेऊँ रोग अनेक।
बचना चाहो रोग से, तजो रसन की टेक।576।
शुद्ध भोजन से विशुद्ध मन, शुद्ध मन में हो ज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, निश्चय हो कल्यान।577।
भोजन तन सुख हेत है, दुःख के कारण नाहिं।
टेऊँ जांसे दुःख बढ़े, मत खाओ तुम ताहिं।578।
राजस तामस भोग को, टेऊँ भोगत जोय।
तन मन का दुःख भोग कर, जात नरक में सोय।579।
चिकना भोजन देख के, पेट भरे जो खात।
कह टेऊँ वह मनुष नहिं, जान पशु तिंह तात।580।
चिकना भोजन जो चहे, तांसे भक्ति न होय।
टेऊँ सात्विक खाय जो, भक्ति कमावे सोय।581।

सात्विक भोजन खान से, होय सात्त्विकी बूझ।
टेऊँ ताँमें पड़त है, ज्ञान ध्यान की सूझ।582।
एक बार भोजन करे, महापुरुष सो जान।
करे अल्प पुन बार दो, टेऊँ सो बुद्धिमान।583।
बहु भोजन जो करत है, आयु हो तिस खीन।
कह टेऊँ सो होत है, पापी दुखिया दीन।584।
भोजन बहुत न कीजिये, टेऊँ सुनिये लोय।
बहुत खान से बुद्धि घटे, आलस निद्रा होय।585।
ठूंस ठूंस कर कंठ तक, खावत मूर्ख लोक।
कह टेऊँ वे भोगते, पेट शूल मन शोक।586।
भूख समय भोजन करे, प्यास समय जल लेत।
कह टेऊँ सुख पाय सो, धर ह्दय में चेत।587।
अल्प अहारी होय तुम, जे चाहत कल्यान।
नातर टेऊँ आपना, जानो मरन निदान।588।
मांस खान में पाप बहु, मत को खावे ताहिं।
कह टेऊँ जो खात है, जावत नर्कों माहिं।589।
मांसाहारी मनुष्य जे, सीधे नरके जाय।
कह टेऊँ तहं रोवहीं, बहुत कष्ट को पाय।590।
मांस अहार न मनुष्य का, खाते पशु अजान।
कह टेऊँ इस खान से, होवे बुद्धि की हान।591।
मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन।592।

बैल अश्व बानर गधा, मांस न खावत घास।
टेऊँ मानुष होय के, क्यों तुम खावत मांस।593।

दूर नगर से करत सब, टेऊँ गोर मसान।
मांस अहारी पेट घर, करत गोर शमशान।594।

एक वर्ष भी नेम से, जो शुद्ध करत अहार।
कह टेऊँ सो देह में, पावत औज अपार।595।

अन्न भोजन से श्रेष्ठ है, टेऊँ दूध अहार।
दूध पान से श्रेष्ठ है, कंदमूल फलहार।596।

फल में रवि का तेज है, पुनि शशि रस भरपूर।
टेऊँ जो फल खात सो, रहत रोग से दूर।597।

ऋषि मुनि विद्वान बहु, खाके बहु कंदमूल।
सूक्ष्म तत्त्व को पा गये, कह टेऊँ तज थूल।598।

कह टेऊँ भोजन समय, कीजे शुद्ध वीचार।
तांसे निर्मल होत मन, उठत न विषय विकार।599।

मांसाहारी होत है, पापी क्रोधी क्रूर।
शाकाहारी होत है, टेऊँ अघ से दूर।600।

टेऊँ शुद्ध वीचार बिन, भोजन है दुःखदाय।
चंचलता चित्त में बढ़े, शान्ति न कबहूँ पाय।601।

रोगी तन को देख के, टेऊँ भोजन त्याग।
होय अरोगी देह जब, युक्तिसहित कर राग।602।

उपवास महिमा

समय समय में कीजिये, कह टेऊँ उपवास।
रोग समय में चेत कर, हो उपवासी खास।603।
कायिक वाचिक मानसिक, दोष हरत उपवास।
दोष समय उपवास धर, टेऊँ कर तिहँ नास।604।
विषय त्याग अन्न त्याग को, कहत मुनि उपवास।
कह टेऊँ उपवास निज, हो चित्त आतम पास।605।
जांका तन मन निबल है, निर्बल कहिये सोय।
कह टेऊँ उपवास ते, निर्बल सबला होय।606।
दुर्बल नर का होत है, जहाँ तहां अपमान।
कह टेऊँ सुख सम्पति, पावत है बलवान।607।
टेऊँ दोषी मनुष का, तन मन दुर्बल होत।
राहु केतु के ग्रहण कर, ज्यों रवि शशि बल खोत।608।
धर्म काम धन मोक्ष का, जान मूल आरोग।
कह टेऊँ उपवास से, मिटत सर्व हीं रोग।609।
एकादशी का व्रत धर, यथाशक्ति दे दान।
कह टेऊँ सत्संग जा, करो हरि गुण गान।610।

उत्तम व्यवहार व परोपकार

कह टेऊँ निज भाव को, शुद्ध कीजे दिन रैन।
विमल भाव से पाइये, आतम अंतर चैन।611।
भले भाव से मिलत है, यश सुख वैकुण्ठ वास।
बुरे भाव से मिलत है, टेऊँ नरक निवास।612।

भले भाव से नीच नर, पावत सुख की खान।
बुरे भाव से ऊँच भी, पावत दूःख महान।613।

बुरे बुराई मिलत है, भले भलाई नीत।
तांते कर सबका भला, जो सुख चाहो मीत।614।

मंदा किसका ना करो, मंदे मंदा होय।
बोये कीकर बीज को, सुख ना पावत कोय।615।

गोविन्द सब घट जानके, सबसे करले प्रीत।
कह टेऊँ हर भेद तुम, सेवो सबको मीत।616।

घृणा किससे ना करो, है हरि सबका मूल।
कह टेऊँ हरि अंश लख, हो सबके अनुकूल।617।

सार कहूँ सब धर्म का, सुनकर धर मन माहिं।
टेऊँ निज प्रतिकूल जो, सो कर किससे नाहिं।618।

निसदिन श्रेष्ठाचरण कर, मन इन्द्रियों को जीत।
कह टेऊँ मंद भाव को, कबहुँ न आनो चीत।619।

ऊंच नीच की दृष्टि तज, करके शुद्ध वीचार।
ब्रह्मातम को एक लख, टेऊँ समता धार।620।

तन मन धन वच प्रान से, करना पर उपकार।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार।621।

सर्व शास्त्र का सार यह, किया ऋषिनि आलाप।
पर उपकार सुपुण्य है, पर पीड़ा है पाप।622।

पर उपकारी पुरुष जे, जीवन सफला तांहि।
कह टेऊँ धन धन वही, भल आये जग मांहि।623।

अपना स्वार्थ छोड़ जो, करता पर उपकार।
कह टेऊँ यश होत है, तांका जगत मंझार।624।
कह टेऊँ सम वृक्ष के, सिर पर सहके दूःख।
सब जीवों को दीजिये, सर्व भांति से सूख।625।
तन से दुःख ना दे किसे, वचन कटु मत बोल।
कह टेऊँ हरि हर्ष हित, पड़दा काहुँ न खोल।626।
जिन जिन पर उपकार में, सहे कष्ट निर्धार।
तिनकी महिमा करत नित, साधू पुन संसार।627।
उदर भरन के कारने, जीता है सब कोय।
टेऊँ पर हित जो करे, जीता है नर सोय।628।
धार दया दिल में सदा, दीनों से कर प्यार।
टेऊँ इस उपकार से, अपना करो उद्धार।629।
जीवन तांका सफल है, जो हो मेघ समान।
कह टेऊँ दे सर्व को, दान प्यार सनमान।630।

कर्म व प्रारब्ध

धर्म कर्म ना छोड़िये, जब तक तन में श्वास।
कह टेऊँ करते रहो,धारे मन विश्वास।631।
वेद विहित सतकर्म जे,है नित करने योग।
कह टेऊँ तिनको करो, यह कहते मुनि लोग।632।
कर्म करन बिन जगत में, रह न साकत कोय।
टेऊँ त्यागे कर्म जो, दुःख पावत नर सोय।633।

शुभ कर्मों बिन ना मिटे, अन्तःकरण की मैल।
कह टेऊँ यह वेद का, है सिद्धान्त अपेल।634।
बिना कामना करत जो, शुभ कर्मों को नीत।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, होवे निर्मल चीत।635।
निष्कामी शुभ कर्म को, कर ना साकत जोय।
कह टेऊँ सह कामना, करे कर्म शुभ सोय।636।
शुभ कर्मों को छोड़ जो, करत पाप के काम।
कह टेऊँ सो मनुष्य दुःख, पावत है यम धाम।637।
सुख दुःख सम्पति विपत्ति में, मत कीजे नर पाप।
कह टेऊँ चित्त चेतके, दया धर्म कर आप।638।
टेऊँ भूल न कीजिये, सुपने में भी पाप।
पाप करे संताप बहु, क्यों भोगत हो आप।639।
सुख चाहत हैं जीव सब, करत न पुण्य सुख हेत।
टेऊँ दुःख ना चहत नर, पाप बहुत कर लेत।640।
कह टेऊँ दुष्कर्म को, भूल न कर जग माहिं।
दुष्कर्मों के करन से, शुद्ध मन होवत नाहिं।641।
मंजन कर पुण्य सिंधु में, परम पवित्र तुम होय।
पाप धूल शिर पाय के, जनम रतन मत खोय।642।
पाप कर्म फल भोग बिन, छोड़त ना कब काहिं।
भूत पाप का सीस पर, सुवार रहत जग माहिं।643।
भगवत नित निष्पाप है तू भी हो निष्पाप।
कह टेऊँ निष्पाप को, दे दर्शन हरि आप।644।

टेऊँ जितना सुख चहो, उतना कर हरि जाप।
दुःख भी जितना सह सको, उतना करिये पाप।645।
सत् कर्मों से प्रीति कर, सुखी होत मति धीर।
पाप कर्म को मूंढ कर, टेऊँ सहता पीर।646।
प्रथमे पापी बढ़त है, पावत धन सुख मान।
पीछे तांको मूल युत, नाश करत भगवान।647।
भगवत न्यायाधीश है, दयालू नाहिं कठोर।
टेऊँ पालन करत पुन, कर्म दंड दे घोर।648।
भगवत का भय धार के, डरत रहो मन माहिं।
कह टेऊँ डरने बिना, निर्भय होवत नाहिं।649।
प्रकृति पिशाची रूप धर, करत कुकर्मी नास।
टेऊँ माता रूप धर, दे धर्मी सुख रास।650।
पांच भूत रवि चन्द्र यम, साखी हृदय आप।
अहनिशि संधि देखते, टेऊँ तव पुण्य पाप।651।
कपटी नर की जीभ है, अंतर बाहर दोय।
जीते सहत निरादरी, पुन मरकर अहि होय।652।
मन बानी आचार में, मीठेपन को आन।
कह टेऊँ तज कुटिलता, करले निज कल्यान।653।
हरि मन्दिर गुरुदेव की, वस्तु चुरावत जोय।
टेऊँ मरकर जगत में, लूला होवत सोय।654।
विप्र गऊ गुरु संत को, जो जन मारत लात।
टेऊँ मरकर जगत में, सो लंगड़ा हो जात।655।

सेवक कुल जन आप गुरु, त्रिया जननी तात।
टेऊँ कर्म विपाक में, ये भागी हैं सात।656।
कह टेऊँ नर मूंढ को, भावत हैं ये सात।
कपट कुसंग धन कुमति पुन, कलह वाम निज गात।657।
पुण्य पाप हत होत है, निज मुख करत बखान।
पाप कहो पुण्य ना कहो, जो तुम चहत कल्यान।658।
सतकर्मी सत भाव से, जपत निरंतर नाम।
टेऊँ कुकर्मी सदा, सुमरत धन सुत वाम।659।
प्रारब्ध है प्रबल अति, कह टेऊँ सुन तात।
जहां जीव का भोग है, तहाँ खैंच ले जात।660।
कर्म भोग भोगत सभी, मेट न साकत कोय।
तांते विस्मय शोक तज, सदा मगन मन होय।661।
अदृष्ट जैसी जीव की, इसी जगत में होय।
कह टेऊँ सत् जान ले, तैसी भोगत सोय।662।
कर्म गति बलवान अति, भोगत हैं सब लोय।
टेऊँ टारे ना टरे, यतन करे बहु कोय।663।
चाहे जा पाताल में, चाहे उड़े अकास।
कह टेऊँ भल जाय कंह, करम न होवत नास।664।
सारे जग को देत है, साहिब एक समान।
घट बढ़ होवत कर्म से, कह टेऊँ सत् जान।665।

पुरुषार्थ

टेऊँ उद्यमी पुरुष को, कठिन काम को नाहिं।
परम पुरुषार्थ चाहिये, अपने मन के माहिं।666।

पुरुषार्थ से मिलत है, यश सुख सम्पति मान।
बिन पुरुषार्थ होत नहिं, टेऊँ को गुणवान ।667।
परिश्रम से होत है, जग में सिद्ध व्यवहार।
आलस से कछु बनत नहिं, टेऊँ कहत पुकार ।668।
काज सिद्ध के मांहि जो, कोटि विघ्न भी होय।
टेऊँ टूटत विघ्न सब, उद्यम न छोड़त जोय ।669।
पुरुष आलसी जगत में, मृतक के सम मान।
टेऊँ उद्यमी पुरुष जो, सो जीवत ही जान ।670।
आलस से नर दरिद्री, होता जगत मंझार।
उद्यम से निर्धन धनी, टेऊँ हो निर्धार ।671।
आलस कर कहु कौन को, मिला राज सुख मान।
पुरुषार्थ से सब भये, कह टेऊँ प्रधान ।672।
आलस से नित होत है, दुर्गति पुन दुर्भाग।
तांते आलस त्याग के, पुरुषार्थ में लाग ।673।
आलस को तुम आपना, प्रबल शत्रु जान।
चार पदारथ पान हित, उद्यम कर बुद्धिमान ।674।
पुरुषार्थ कर धर्म हित, जांसे होय उद्धार।
कह टेऊँ आलस करे, पाप कर्म को टार ।675।
आलस निद्रा में सदा, वृथा जनम न खोय।
पुरुषार्थ से काम कर, परमादी मत होय ।676।
सबसे पहले यत्न कर, अपना करो उद्धार।
कह टेऊँ पीछे करो, औरों का निस्तार ।677।

कर उद्धार तुम आपना, मन इन्द्रियों को जीत।
टेऊँ मन जीते बिना, होत उद्धार न मीत ।678।
निज उद्धार से होत है, टेऊँ जगत उद्धार।
स्व सुधार बिन लोक का, कबहुँ न होत सुधार ।679।

स्वास्थ्य रक्षा

कह टेऊँ जो जगत में, पालत प्राकृत नेम।
होय निरोगी मनुष सो, पावत निश्चय क्षेम ।680।
जागन शयन विहार पुन, खान पान स्नान।
टेऊँ करत जो नेम से, पावत सो कल्यान ।681।
कर्म करत जो नेम से, सो जन होत निरोग।
टेऊँ पुन बलवान हो, भोगत आनन्द भोग ।682।
जिसका कोई नेम नहीं, कह टेऊँ जग मांहि।
तांके जीवन स्वास्थ्य का, कोय भरोसा नांहि ।683।
स्वास्थ्यनाशक जगत में, जे जे कारण आहिं।
कह टेऊँ तिन सर्व में, नेम भंग सम नांहि ।684।
नेम बिना जो चलत है, टेऊँ उल्टी चाल।
सो निज स्वास्थ्य नाश कर, भोगत रोग विशाल ।685।
सब रोगों की औषधि, टेऊँ है व्यायाम।
कसरत कर नित नेम से, पाओ सुख विश्राम ।686।
ईश वेद गुरु आपनी, चार कृपा ये जान।
कह टेऊँ इन चार से, उपजे तत्त्व विज्ञान ।687।
मानुष तन गुरुदेव पुन, सम दम साधन ज्ञान।

कह टेऊँ ये मिलत जब, ईश कृपा तब जान।688।
वेद अर्थ के पढ़न की, शक्ति बुद्धि में होय।
कह टेऊँ सत् जानिये, वेद कृपा है सोय।689।
कह टेऊँ सत् शास्त्र पुन, निज अनुभव अनुसार।
देह यथार्थ बोध गुरु, यह गुरु कृपा सार।690।
वेद गुरु के वचन सुन, धारे हृदय माहिं।
कह टेऊँ तां पर चले, निज कृपा सा आहिं।691।
करन योग जो काज हैं, पहले करिये सोय।
कह टेऊँ जिसके किये, सब कार्य सिद्ध होय।692।
कह टेऊँ समझे बिना, कर्म करे मत कोय।
कर्म करो सब सोच के, जांसे बहु सुख होय।693।
यज्ञ पाठ तप दान से, सर्व विघ्न हो नास।
कह टेऊँ ये नित करो, मन में धर विश्वास694।
त्याग तप सच सादगी, प्रार्थना विश्वास।
कह टेऊँ ये साधके, पाओ सुख अविनाश।695।
मार्ग सूधा जो चले, सो पहुंचत है गाम।
बिन मार्ग पहुंचे नहीं, कह टेऊँ निज धाम।696।

सत्य वचन

वेद संत मिल कहत है, विवेक तकड़ी तोल।
अश्वमेध यज्ञ सहस से, बड़ा सत्य का मोल।697।
सत्य तुल्य नहिं धर्म पुन, योग यज्ञ जप जाप।
कह टेऊँ नहिं जगत में, झूठ तुल्य को पाप।698।

सत्य का फल सबसे बड़ा, कहते संत सुजान।
कह टेऊँ सत्य कहन से, रीझत है भगवान।699।

झूठे प्राणी पड़त है, घोर नर्क के माहिं।
सत्यवादी स्वर्गे बसे, टेऊँ संशय नाहिं।700।

सत्यवादी निष्काम जो, परहित बोलत बोल।
कह टेऊँ तिंह पुरुष का, इक इक बोल अमोल।701।

कह टेऊँ जे जगत में, नीच जाति के आहिं।
झूठा सबसे नीच है, कहा वेद के माहिं।702।

कारण से जो झूठ कह, टेऊँ सो दुःख पात।
बिन कारण जो झूठ कह, क्यों तिस हो कुशलात।703।

सत्य मार्ग है मोक्ष का, झूठ नर्क का द्वार।
टेऊँ सत्य से विजय हो, होय झूठ से हार।704।

गुन दुश्मन के कहत जो, कहे सजन के दोष।
टेऊँ साचा मनुष्य सो, जग में है निर्दोष।705।

बोलत झूठी बात जो, सो नर झूठा जान।
पुन गुरु आगे झूठ कह, सो अति अधम पछान।706।

कह टेऊँ सत् असत्य की, करके हृदय तोल।
त्याग करे तुम असत्य को, सत्य को राखो कोल।707।

कह टेऊँ संसार में, सत्य का कर व्यापार।
टोटा कबहुँ ना पड़े, होवे लाभ अपार।708।

कह टेऊँ है सत्य से, स्थित धरणि अकास।
चलत पवन जल बहत है, अग्नि करत प्रकास।709।

पहले मन विचार के, करता जो व्यवहार।
सो जन पावत सूख को, कह टेऊँ निर्धार।710।
पहले जो नर काम कर, पीछे करत विचार।
कह टेऊँ सो जगत में, पावत दूःख अपार।711।
काम करो वीचार के, नाम जपो मन लाय।
दान करो दिल खोलके, कह टेऊँ सुख पाय।712।
मकड़ी हस्ती शेर शुक, भ्रमर कपी कुरंग।
कह टेऊँ वीचार बिन, मरहैं मीन पतंग।713।
स्वच्छ होय आचार पुन, स्वच्छ होय व्यवहार।
टेऊँ स्वच्छ वीचार से, मिलता सत् कर्तार।714।

विद्या

मन इन्द्रियों को जीत कर, पूरन श्रद्धा धार।
कह टेऊँ विद्या पढ़ो, ज्ञानी गुरु के द्वार।715।
धर्म कर्म जप योग तप, ज्ञान ध्यान पुन दान।
प्रेम नेम हरि भक्तिका, विद्या करत वख्यान।716।
ब्रह्म विद्या जो जन पढ़े, उपजे तांको ज्ञान।
कह टेऊँ विद्वान सो, पावत पद निर्बान।717।
विद्या सब अवगुन हरे, देवे श्रेष्ठ विचार।
कह टेऊँ चित लाय के, विद्या पढ़ हरवार।718।
टेऊँ विद्या यतन से, पढ़िये सहित विचार।
काम क्रोध मद लोभ तज, पाओ सूख अपार।719।

शास्त्र वेद वेदांग पढ़, पढ़ इतिहास पुरान।
योग धर्म के शास्त्र पढ़, कह टेऊँ पा ज्ञान।720।
त्याग करे जग राग को, मन में धार विराग।
टेऊँ आतम ज्ञान हित, पढ़ वेदान्त सराग।721।
जा विद्या अविद्या हरे, करे भरम सब नास।
कह टेऊँ सा पढ़ विद्या, पाओ ब्रह्म हुलास।722।
अविद्या से ही भासता, यह जग नाना रूप ।
ब्रह्म विद्या से भासता, टेऊँ ब्रह्म स्वरूप।723।
विद्या पढ़कर मनुष्य जो, करता है अभिमान।
कह टेऊँ संसार में, सो है अविद्या वान।724।
टेऊँ विद्या पाय कर, तज मन का मद मान।
सरल भाव निष्कपट हो, आनन्द पाय महान।725।
विद्या पढ़कर कर्म शुभ, कीजे मन चित लाय।
मन के दोष निवार के, कह टेऊँ सुख पाय।726।

संतोष और निर्लोभता

सुखी संतोषी रहत है, पाये हरि सुखधाम।
टेऊँ तृष्णावंत नर, भरमत आठों याम।727।
संत सुखी संतोष कर, जाँको तृष्णा नाहिं।
मूँढ दुःखी रोवत सदा, तृष्णा धर मन माहिं।728।
कह टेऊँ संसार में, सब वस्तु घट जात।
एकहि तृष्णा ना घटे, बढ़त रहे दिन रात।729।

तृष्णा काली नागिनी, दुःख विष से भरपूर।
कह टेऊँ सुख चहत जो, हो तुम तांसे दूर।730।
तृष्णा है संसार में, दारुण दुःख का मूल।
टेऊँ भुलावे राम से, शुभ गुण कर निर्मूल।731।
लोभ पाप का बाप है, लोभ कपट की खान।
लोभी नर नरकें पड़े, कह टेऊँ सत् जान।732।
जैसे पंछी जाल में, चोग देख फंस जात।
त्यों लोभी जग जाल फंस, कह टेऊँ दुःख पात।733।
लोभ पाप का मूल है, रस रोगों का मूल।
मोह दुःखों का मूल है, टेऊँ तज त्रिशूल।734।
नंगा आया जगत में, नंगे तुम चल जाय।
कह टेऊँ तज लोभ को, हरि से हेत लगाय।735।
कौन जाल में फंसत है, कौन फांसता नाहिं।
निर्लोभी फासत नहीं, लोभी फंसता ताहिं।736।
लोभी धन के कारने, जात धनी के पास।
कह टेऊँ संतोष जिंह, करत न सो किस आस।737।
ममता दुःख का मूल पुन, टेऊँ है जम जाल।
ताहिं काट गुरु ज्ञान की, ले तलवार विशाल।738।
यथा लाभ संतोष कर, मन की छोड़ उपाधि।
कह टेऊँ हरि भजन कर, लाओ सहज समाधि।739।
कह टेऊँ बरसत सदा, उर में अमृत धार।
लोभी तिहं पीवत नहीं, ममता बैठी द्वार।740।

ममता मन की मार तुम, टेऊँ खोल किवार।
शीतल कर चित्त आपना, पीके अमृत धार।741।

माया का कौतुक

माया छल वल रूप है, माया दुःख का धाम।
टेऊँ माया ममत तज, सुमरो हरि का नाम।742।
माया कारन लड़त सब, टेऊँ लोक तमाम।
बेटा लड़ता बाप से, पति से लड़ती वाम।743।
कह टेऊँ सम सांपिनी, माया है निर्धार।
अपने सुत को आप ही, पापिन करे अहार।744।
धन इच्छा से बहुत नर, सेवत मड़िहि मसान।
निर्धन लख पित मात को, करते त्याग अजान।745।
कूड़ कपट प्रपंच कर, क्यों लेते धन जोड़।
कह टेऊँ संग ना चले, तांते अब ही छोड़।746।
धन के मद में मस्त हैं, बहुते मूंढ अजान ।
कह टेऊँ धन मद तजे, को इक मनुष सुजान।747।
धन के सबही दास हैं, धन न किसी का दास।
टेऊँ धन के लोभ से, करत न सत्य प्रकास।748।
निर्धन आदर दे न को, करत धनी सत्कार।
कह टेऊँ यह जानिये, माया का व्यवहार।749।

धनी पुरुष का जगत में, पर भी अपना होय।
निर्धन नर के पास कब, टेऊँ जात न कोय।750।

शूम किसे धन देत नहिं, ज्यों मधुरिख मधु नाहिं।
राजा तस्कर जब हरे, तब दुःख होवे ताहिं।751।

तीन लोक को जान ले, माया का ही खेल।
कह टेऊँ माया तजे, करो हरि से मेल।752।

निंदा अंग

निंदा किसकी मत करो, निंदा नरक दिखात।
निंदा निंदक के सभी, टेऊँ पुण्य नशात।753।

निंदक निंदा कर सदा, सहत बहुत संताप।
कह टेऊँ निज पुण्य दे, लेत और का पाप।754।

वेद गुरु हरि संत की, करत निंदा जन जोय।
घोर नरक में जात है, कह टेऊँ नर सोय।755।

निंदक जैसा मीत नहिं, टेऊँ जगत मंझार।
पुण्य देत है आपना, लेहि पाप का भार।756।

जो जन सबसे गुन गहे, उत्तम सो जन जान।
कह टेऊँ सम हंस के, जल तज पय कर पान।757।

दोष और के देखते, दोषी हो नर आप।
अपने अवगुन देखते, टेऊँ हो निष्पाप।758।

पर के दोष न देखिये, देखो अपना दोष।
क्रोध न कीजे और पर, मन पर कीजे रोष।759।

टेऊँ अवगुन आपना, देखो होय सचेत।
पर के दोष न देखिये, रे नर मूँढ अचेत।760।
जो जन अवगुन को गहे, कह टेऊँ जग बीच।
सुख पावत सो ना कभी, भोगत दुःख को नीच।761।
कह टेऊँ निज दोष को, संत छिपावे नाहिं।
दोष दुराये पातकी, दुःखी होत मन माहिं।762।
निज निंदा सुन क्रोध तज, टेऊँ मन वीचार।
होय दोष तो वेग तज, नां तो देहि विसार।763
निंदक निंदा कर सभी, अवगुन देत उघार।
कह टेऊँ तुम सोचके, तांको तुरत निकार।764।
निंदा सुनकर आपनी, मन को मत मुरझाय।
टेऊँ सुन निज कीर्ती, मन को ना हर्षाय।765।
सुन प्रशंसा आपनी, तुम प्रसन्न मत होय।
झूठ जान तत्क्षण तिसे, शिर नीचे कर रोय।766।
निंदा दुःख को देत है, अस्तुति दे अभिमान।
कह टेऊँ दोनों तजे, समता धार सुजान।767।
अस्तुति निंदा देह की, आतम की कब नाहिं।
टेऊँ ऐसे समझ कर, मगन रहो मन माहिं।768।

अहंकार अंग

नम्र भाव मन धारले, त्यागे तन अभिमान ।
टेऊँ शील स्वभाव से, अपना कर कल्यान।769।

प्रभुता की तुम चाह तज, करले प्रभु से प्रेम।
कह टेऊँ प्रभु प्रेम से, हो प्रभुता अरु क्षेम।770।

परम शान्ति मन में सदा, जो नर चहे सुजान।
कह टेऊँ सो नर तजे, मलिन देह अभिमान।771।

प्रेम भाव अरु नेम से, करम करो निष्काम।
कह टेऊँ अभिमान तज, पाओ मन विश्राम।772।

तुमको हमको सर्व को, देता इक दातार।
और न कोऊ देत किस, मत कर तूँ अहंकार।773।

सर्व वस्तु भगवान की, और किसी की नांहि।
टेऊँ अपनी जान के, गर्व न कर मन मांहि।774।

करता हरता सर्व का, भरता है भगवान।
कह टेऊँ तुम आप को, करता कबहुँ न मान।775।

टेऊँ मैं मेरा तजे, कर प्रभु से तुम प्यार।
सबका कर्त्ता है वही, काहिं करत अहंकार।776।

ना मैं ना मेरा कछु, ऐसा निश्चय जाहिं।
कह टेऊँ सो मुक्त नर, काल न व्यापे ताहिं।777।

मैं को तज मैं पाइये, मैं में मैं न सुहाय।
कह टेऊँ मैं छोड़के, मैं के बीच समाय।778।

काया माया थिर नहीं, ज्यों तरुवर की छाय।
कह टेऊँ तिंह गर्व तज, हरि से हेत लगाय।779।

कह टेऊँ नर चेतले, तन का तज अहंकार।
एक दिवस में देह यह, जलकर होगी छार।780।

कह टेऊँ अहंकार को, अपना दुश्मन जान।
ना मैं देह न देह मम, यह लख तज अभिमान।781।
आत्म इन्दु को ग्रासता, ग्रहण राहु अहंकार।
टेऊँ अहंता जब मिटे, तब हो निज दीदार।782।
मन मुदता संतोष धर, तुम दरिद्रता माहिं।
टेऊँ सम्पति पाय पुन, गर्व करो कब नाहिं।783।
कह टेऊँ जहं ममत नहिं, नहीं मोह अहंकार।
रहत वहां आनन्द नित, ज्ञान ध्यान हरि प्यार।784।
तन मन धन गुन राज मद, जोबन मद पहिचान।
बल विद्या कुल जाति मद, रूप सुन्दर मद मान।785।
भेख पंथ मठ मन्दिर मद, वर्णाश्रम मद जान।
टेऊँ सब मद जो तजे, ताहिं मिले भगवान।786।

काम प्रभाव

मारे मदन अनेक है, देव दनुज नर धीर।
श्रृङ्गी मच्छन्दर आदि मुनि,पंडित गुणी गंभीर।787।
जो नर किंकर काम का, दुःखी होत नर सोय।
टेऊँ भक्त जो राम का, सदा सुखी सो होय।788।
आवत मन में काम जब, करत बुद्धि तब नाश।
कह टेऊँ पर नारि को, देखत धर दुर आस।789।
शनै शनै सुख वृक्ष को, काटत काम कुठार।
कह टेऊँ समझत नहीं कामी मूँढ गंवार।790।

जो नर काम अधीन हो, मिलन चहत पर नार।
कह टेऊँ सो स्वान ज्यों, होत दुःखी हरवार ।791।
सन्मुख काम क्रोध के, ठहर सकत नहिं कोय।
टेऊँ जीते युगल जो, सूरा कहिये सोय ।792।
काम क्रोध प्रबल अती, तां से लड़त न जोय।
टेऊँ लड़ता और से, मूरख मानो सोय ।793।
कृपण क्रोधी क्रूर अति, चौथा कामी जान।
कह टेऊँ इन संग से, नाश होत है ज्ञान ।794।

स्त्री से घृणा

कामिनी काया रोग मय, मल मूत्र का थान।
तामें जो रति करत है, टेऊँ सो पशु जान ।795।
हाड़ मास और रक्त बिन, नही कछु दीसे और।
कह टेऊँ तज नार को, जान नर्क की ठौर ।796।
नारी नागिन नष्ट हित, प्रगट भई जग मांहि।
नागिन से नारी बुरी, कह टेऊँ तज तांहि ।797।
नारि नरक का मूल है, बुरा नारि आभास।
नारी का मृदु बोल सुन, उपजे विषय विलास ।798।
नारी सम बलवान नहिं, कोई जगत मंझार।
टेऊँ मन को खैंचकर, दीन करत हरवार ।799।
मनमुख निंदक कृतघ्न, चौथी चंचल नार।
टेऊँ इनका संग तज, जे चाहो निस्तार ।800।

कंचन कामिनी साथ जो, टेऊँ राखत हेत।
जीवत पावत शांति नहिं, मर कर होवत प्रेत ।801।
कह टेऊँ मन इन्द्रिय पर, मत कीजे विश्वास।
टेऊँ अकेली नार के, नहिं बैठो कब पास ।802।
देख नारि की चमक जो, फिर फिर देखत तांहि।
टेऊँ ऐसा नीच नर, जावत नर्कों मांहि ।803।
मंद भाव को धार कर, देखत जो पर नार।
कह टेऊँ सो अंध हो, दूजे जनम मंझार ।804।
जो नर विषय विलास की, राखत है मन आस।
तांके गल में पड़त है, कह टेऊँ जम फास ।805।
व्यसन जग में बहुत हैं, तामें परबल दोय।
रसना का रस एक पुन, दूजा स्पर्श जोय ।806।
बहुत रसों के लेन से, होवे तन बलवान।
सबल देह में होत है, काम क्रोध मद मान ।807।
काम क्रोध मद मान से, हृदय होय मलीन।
टेऊँ तांते छोड़ रस, पाओ सुख प्रबीन ।808।
कह टेऊँ रस त्याग से, नीच ऊँच बन जात।
भोग रसों से ऊँच भी, नीच गति को पात ।809।
टेऊँ श्रेष्ठाचरण कर, त्यागे विषय विलास।
नाम जपे मन वश करे, हृदय पाय हुलास ।810।
कोटिन में का एक है, पतिवृत सीय समान।
औरों से जा लाय नहिं, तन मन वाणी प्रान ।811।

वस्तर भूषण रूप से, नहिं शोभत है नार।
टेऊँ पतिव्रत धर्म से, शोभत जगत मंझार ।812।
पतिव्रता की कीर्ती, जग में होत महान।
कह टेऊँ सुर लोक में, सुर भी करते गान ।813।

बसन्त महिमा

आयी है ऋतु बसंत की, खुले भंवर के भाग।
कह टेऊँ अहनिश करे, गुलिशन से अनुराग ।814।
ऋतु बसंत की देखि के, भंवरा भये बहार।
कह टेऊँ चल चिमन में, रिलमिल करत गुंजार ।815।
ऋतु बसंत की देख के, भंवर भए मस्तान।
टेऊँ लेन सुगंध हित, जावत फूल स्थान ।816।
ऋतु बसंत की देख के, भ्रमर भये सुजाग।
टेऊँ लेवत फूल रस, आन रसों का त्याग ।817।
ऋतु बसंत की रस भरी, भंवरों के मन भाय।
कह टेऊँ इक भूंड को, बसंत ऋतु न सुहाय ।818।
ऋतु बसंत बिनु भंवर मन, कभी न आवे चैन।
कह टेऊँ ऋतुराज में, बोलत मीठे बैन ।819।
ऋतु बसंत को देखके, सुखी भये सब संत।
कह टेऊँ सत्संग में, गावे राग बसंत ।820।
बादल पूरब देश से, आकर बरसे आज।
कह टेऊँ दुष्काल हर, राखी सबकी लाज ।821।

बादल पूरब देश से, आये कर गजकार।
कह टेऊँ तिहं बरस के, कीनी जय जय कार ।822।

मिश्रित उपदेश

कह टेऊँ इस देह में, और सार कछु नाहिं।
सार वस्तु परमात्मा, निशदिन सुमरो ताहिं ।823।
वस्तर भूषण सुगंध से, जिसका करत श्रृंगार।
टेऊँ सो तन खाक हो, देखो कर वीचार ।824।
जिस तन को तुम पालते, सो तो संगी नांहि।
तांते टेऊँ मत करो, मोह इसी के मांहि ।825।
इन्द्र जाल वत जगत यह, मिथ्या तथ्या नांहि।
टेऊँ लख के वमन ज्यों, मत ग्रहो तुम तांहि ।826।
किस की जग में कामना, पूरी होवत नाहिं।
तांते ना कर कामना, कह टेऊँ मन माहिं ।827।
जितना सुख संसार में, उन से बहु दुख जान।
कह टेऊँ जग आस तज, भजन करो भगवान ।828।
गर्भ वास है नरक सम, दुसह दुःख तां माहिं।
टेऊँ लटकत उलट मुख, जीव सुखी नहिं ताहिं ।829।
पराधीन पुन मूँढता, बचपन में है तात।
हित अनहित की बूझ नहिं, दुखी रहत दिनरात ।830।
यौवन में भी नाहिं सुख, होवत प्रगट विकार।
टेऊँ विषय विलास हित, पाप करत हरवार ।831।

अंग खीन छबि हीन तन, होत बुढ़ापे माहिं।
टेऊँ रोगी रहत नित, मानत कोय न ताहिं।832।
जोबन का बल वृद्ध में, कह टेऊँ नहिं होय।
हरि सुमिरन का काम जो, जोबन में कर सोय।833।
टेऊँ जो दुःख अंत का, कह न सकत नर कोय।
जांके निकसत प्रान जब, जानत है इक सोय।834।
पापी नर जा नरक में, भोगत दूख महान।
रक्त पूंइ को खात है, कह टेऊँ सत जान।835।
पशु पंछी अहि आदि सब, जोनी है दुख खान।
तामें रंचक सूख नहिं, टेऊँ निश्चय मान।836।
सुरग लोक में नांहि सुख, टेऊँ देख विचार।
गिरने की भय रहत तहं, पुन मत्सर अहंकार।837।
जनम मरन बहु पायके, भय दुख देख महान।
तौ भी सोचत नाहिं कब, टेऊँ मूंढ अजान।838।
कह टेऊँ नर मूंढ को, नाक नैन कछु नाहिं।
जिसका नीमक खात है, गुन गावत नहिं ताहिं।839।
जिहं इच्छा से होत है, उत्पति प्रलय नीत।
सूर्य चन्द्र रोशन करे, टेऊँ भज तिहं मीत।840।
भोग वासना त्याग के, मन को शांत बनाय।
कह टेऊँ यह वासना, जन्म जन्म भटकाय।841।
जांको भय नहिं काल की, सो नित करता पाप।
टेऊँ भय जिहं करत सो, पाप तजे हरि जाप।842।

आसा तृष्णा ईर्षा, चौथी चिंता आग।
टेऊँ इसमें जलत सब, बाचे को बड़भाग ।843।
कह टेऊँ जग आग से, छुटे सो जो भाग।
भागत कोई लाख में, जांके जागे भाग ।844।
जैसे जाली में पड़ा, पंछी नभ नहिं जात।
टेऊँ त्यों नर मोह वश, आतम पद नहिं पात ।845।
बांधा लोटा माल से, अर्ध उर्ध जिम पात।
जीव बंधा तिम आस में, जनम मरन को पात ।846।
जग को मिथ्या जान के, मन में धर वैराग।
कह टेऊँ नित कीजिये, आतम में अनुराग ।847।
विषय वासना वाम संग, पुनि विवेक वैराग।
आदि अंत त्यागे धरे, सो जन है बड़ भाग ।848।
शांति सम संतोष पुनि, वैर विरोध विखाद।
आदि अंत धारे तजे, पावे सो अहलाद ।849।
सील संजम संतोष पुन, सत्य श्रेष्ठ आचार।
कह टेऊँ सुख चहत जो, धारो पांच सकार ।850।
गंगा गीता गायत्री, ज्ञानी गुरु गोविंद।
टेऊँ सप्तम गाय को, सेवे पा आनंद ।851।
कह टेऊँ कर सादगी, खान पान पहिरान।
सादी रहनी रहन से, रीझत है भगवान ।852।
हासी किससे ना करो, हासी है दुःख रास।
टेऊँ हासी करन से, भये यादव सब नास ।853।

मीठी वस्तु मौन सम, नहिं देखी जग माहिं।
टेऊँ तांते मौन गह, व्यर्थ बोल न काहिं।854।

जो सुख है एकांत में, सो सुख सुर पुर नाहिं।
कह टेऊँ एकांत जहं, सदा रहो तुम ताहिं।855।

बिन वैराग न चलत को, टेऊँ हरि मग माहिं।
तांते धार विराग को, मोह करो कब नाहिं।856।

साक्षी होकर देखले, इस जग का जिनसार।
कह टेऊँ किस जीव को, भला बुरा न उचार।857।

द्वन्द्व जगत का देखके, घबराओ कब नाहिं।
कह टेऊँ अलमस्त हो, रहिये आनंद माहिं।858।

दृष्टिमान यह जगत है, दुखमय चंचल रूप।
कह टेऊँ तिहं त्याग के, पाओ अचल स्वरूप।859।

असंग आतम जो लखे, बुद्धि का करता मान।
कह टेऊँ सो मुक्त है, विचरत सूर्य समान।860।

ब्रह्म ज्ञान बिन होत नहिं, काहूं का कल्यान।
तांते गुरु से लेह तुम, टेऊँ ब्रह्म का ज्ञान।861।

साधन साधे साधु सो, गुण ग्रहे गुणवान।
कह टेऊँ परहित करे, मानुष सो परवान।862।

राम नाम में रति नहीं, मन माया में जास।
कह टेऊँ संसार में, जन्म व्यर्थ है तास।863।

पोषत है दिन रैन जो, अन्न धन देहि अपार।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, अपना जनम सुधार।864।

कह टेऊँ निज धर्म में, करता जो अनुराग।
यश कीरति को पाय सो, खोले अपना भाग ।865।
धर्म तजे सो मनुष्य नहिं, जीवन तिहं बेकार।
कह टेऊँ पशु तुल्य सो, भूमि पर है भार ।866।
संत गुरु भगवान पुनि, देश कर्म की नीत।
टेऊँ सेवा करत जो, मानो तांहि पुनीत ।867।
निर्मल बुद्धि के नैन से, सब घट देखो राम।
कह टेऊँ जिहं देखते, हो सब पूरन काम ।868।
निष्कामी निर्मान हो, सेव करत जन जोय।
कह टेऊँ तिस पर सदा, भगवन प्रसन्न होय ।869।
पढ़ता सुनता बहुत है, पर जो समझत नांहि।
कह टेऊँ निश्चय कहूं, ज्ञान होत नहिं तांहि ।870।
दशों दिशा में रम रहा, एक राम भरपूर।
कह टेऊँ अज्ञान कर, मूरख जानत दूर ।871।
विश्वास घाती कृतघ्न, व्यभिचारी ठग चोर।
कह टेऊँ इन पांच को, तीन लोक नहिं ठौर ।872।
देख दूख दुर्वासना, तांका करले त्याग।
कह टेऊँ जे सुख चहो, कर आतम में राग ।873।
स्वल्प हेत ना बहुत को, नाश करत बुद्धिमान।
टेऊँ स्वल्प तज बहुत की, रक्षा करत गुणवान ।874।
लोक वेद कुल लाज पुनि, जग की आशा छोड़।
कह टेऊँ हरि मिलन हित, गुरु से नाता जोड़ ।875।

मिश्रित उपदेश

जब लग रति परिवार में, तब लग मुक्ति न होय।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान बिन, जन्म जन्म नर रोय।876।
मात पिता बंधु वाम सुत, स्वार्थ के सब जान।
कह टेऊँ तां प्रीत तज, भजन करो भगवान।877।
कह टेऊँ मरने पिछे, कहत सबी संग राम।
जीवत कोई ना कहे, संगी है हरिनाम।878।
कह टेऊँ कब ना करो, मूंढ जनों का संग।
जांके संग से कष्ट बहु, पुन हो शुभ मति भंग।879।
राजा हो वा रंक हो, निर्धन वा धनवान।
कह टेऊँ को अंत में, साथ न ले सामान।880।
हंसा बगुला रूप इक, किस विध जाना जाय।
हंसा मोती चुगत है, बगुला मछ्ली खाय।881।
अंतःकरण ऊजल बिना, होय न आतम ज्ञान।
टेऊँ आतम ज्ञान बिन, होय न कब कल्यान।882।
कह टेऊँ तुम ना करो, दान करन में देर।
शुभ कर्मों से पलक में, मन देता है फेर।883।
भूखे भोजन देत जो, प्यासे को जल दान।
नंगे को पट देत जो, टेऊँ सो धन जान।884।
दाता सो ना जानिये, धन का देवे दान।
कह टेऊँ दाता वही, सबको दे सन्मान।885।
नैनों में वैराग धर, मुख से हरि गुन गाय।

हृदय में धर ज्ञान को, कह टेऊँ सुख पाय ।886।
अतिथि मात पित संत गुरु, जानो प्रत्यक्ष देव।
कह टेऊँ सुख पाय तुम, पांचो की कर सेव ।887।
दमन करो मन इन्द्रिय का, धन से करले दान।
टेऊँ सब पर कर दया, पाओ सूख महान ।888।
देख सुंदरता देह की, मूरख करत गुमान।
कह टेऊँ नहिं जानते, इक दिन जरत मसान ।889।
कह टेऊँ थिर ना रहा, किस का यह तन थूल।
तूँ कहता मेरा रहे, यह है तेरी भूल ।890।
बहु जीने की आस तज, ले हरि का आधार।
कह टेऊँ हरि शरन से, तेरा होय उद्धार ।891।
काम न आवत मित्र तब, जब मारे जम चोट।
कह टेऊँ तां प्रीत तज, लेह ईश की ओट ।892।
मोह सर्व का त्याग के, हो निर्मोह सुजान।
कह टेऊँ वैराग धर, पाओ शांति महान ।893।
रे मन तेरा जगत में, दो दिन का है वास।
कह टेऊँ यों समझ के, तज भोगों की आस ।894।
ऐसा शब्द न सुनहु कब, जांसे हो मन भेद।
ऐसा दृश्य न देख कब, जांसे होवे खेद ।895।
भोजन विद्या भजन पुन, दूर चलन जो होय।
धीरे धीरे करत से, दुख नहिं लागे कोय ।896।
अब का मिला न बिछुड़ते, मिला रहे हर काल।

कह टेऊँ हरि से मिलो, तांते तुम तत्काल ।897।
अब का कारज अब करो, कल पर राखो नांहि।
नहीं भरोसा स्वास का, कह टेऊँ जग मांहि ।898।
हरि मिलने की वेल यह, कहते संत पुकार।
कह टेऊँ हरि मिलन हित, जाओ गुरु के द्वार ।899।
रैन गयी पुन दिन गया, दिवस गया भयी रात।
कह टेऊँ मन चेतले, आयु ऐसे जात ।900।

मिश्रित उपदेश

छः सौ इक्कीस सहस ही, चलत स्वास दिन रैन।
इतना हरि का नाम जप, टेऊँ पाओ चैन ।901।
दो सौ माला फेर ले, दो तिन घंटे माहिं।
कह टेऊँ इस जाप से, दूःख न पावत काहिं ।902।
अन बातें बहु करत सो, जा का लगत न ध्यान।
ध्यान लगत जिस मनुष्य का, सो नहिं बोलत आन ।903।
कोयल कौवा एक रंग, जान सके ना कोय।
कह टेऊँ तब जानते, जबहीं बोलत सोय ।904।
तैसे संत असंत को, सहज न जाना जाय।
कह टेऊँ तब जानिये, जब मुख बात अलाय ।905।
गुणबिन शोभत मनुष्य नहिं, भावे सुन्दर होय।
टेऊँ ज्यों फल फूल बिन, बृछ न शोभत कोय ।906।
दर्शन कर भगवान का, जो है देखन योग।
झूठे जग को देख के, टेऊँ दुःख ना भोग ।907।

टेऊँ दया दयाल की, दुःख हर सब सुख देत।
मूरख नर समझत नहीं, हरि की दया न लेत ।908।
दुर्लभ मानुष तन विखे, पढ़ कर वेद पुरान।
जो नहि जानत ब्रह्म को, सो है मूंढ अजान ।909।
सूरत मूरत में बसे, मूरत सूरत माहिं।
कह टेऊँ इक जान ले, भेद लखो मत ताहिं ।910।
दर्शन मात्र जगत यह, मृग तृष्णा ज्यों जान।
तांसे कुछ भी ना मिले, कह टेऊँ सत मान ।911।
दर्शन मात्र जगत यह, टेऊँ कहत सुनाय।
ज्ञानी देखत सुख लहे, दुख अज्ञानी पाय ।912।
मिथ्या दुख मय जान जग, धारो मन निर्वेद।
मोह महा रिपु जीतकर, कह टेऊँ हर खेद ।913।
जगत भ्रम का जाल यह, ताहिं न आप फसाय।
कह टेऊँ जग आस तज, गोबिंद के गुन गाय ।914।
राग रोष को दूर कर, चिंता छोड़ विकार।
कह टेऊँ तज वासना, सुख से करो विहार ।915।
राग द्वेष मय जग तजे, कर सत्संग सदवार।
टेऊँ ब्रह्म विचार कर, भव से उतरो पार ।916।
कह टेऊँ इस जीव का, जागे जब हीं भाग।
तब ही उसके हृदय में, जग से होय विराग ।917।
अपने सुख की चाह से, प्रीत करत संसार।
कह टेऊँ स्वार्थ बिना, करत न कोई प्यार ।918।

तिल भर दौलत ना चले, दर तक चाले नार।
मित्र चले शमशान तक, धर्म चले सुर द्वार।919।
पांच तत्त्व का पिंजरा, तांमें पंछी प्रान।
कह टेऊँ जब उड़ चला, तब तन सूना जान।920।
माटी का यह गात है, माटी में मिल जात।
कह टेऊँ तन मोह तज, हरि सुमरो दिन रात।921।
मंदिर मसान मृतक ढिग, सत्संग पिछ्ली रात।
टेऊँ हरि सुमरन करो, बोल न जग की बात।922।
काल नगारा बजत नित, गाफिल सुने न ताहिं।
कह टेऊँ सो सुनत है, जिहं वैराग मन माहिं।923।
धर्मशाल ये जगत है, जीव मुसाफिर जान।
टेऊँ तिनके वियोग से, शोक न करो सुजान।924।
प्रीत तजो परिवार की, भोग विषय से भाग।
कह टेऊँ गुरु शरण ले, हरि से कर अनुराग।925।
कह टेऊँ वे जगत में, जीव अज्ञानी जान।
दो दिन जीवन हेत जे, जोड़त बहु सामान।926।
कह टेऊँ संसार में, जीवन दो दिन जान।
एक दिवस है जन्म का, द्वितीय मरन समान।927।
रक्त बिंदु से तन बना, टेऊँ निश्चय जान।
तांते तन की प्रीत तज, राखो रति भगवान।928।
मठ मंदिर धन मात पित, दारा सुत परिवार।
कह टेऊँ तव साथ को, चलत न चलती बार।929।

धन दौलत तो दूर है, साथ न चालत देह।
टेऊँ निकसे प्रान के, जरत चिता में एह।930।

मिश्रित उपदेश

ऊँचे महल बनाय के, बैठे निज घर मान।
टेऊँ मूँढ न जानता, मेरा घर शमशान।931।
कह टेऊँ थिर ना रहे, जोबन आयु प्रान।
तप्त लोह पर बूंद पुन, जल के तरंग समान।932।
और मरे क्यों रोवते, रोवहु अपने हेत ।
इक दिन तुम भी जायंगे, छोड़ जगत का खेत।933।
भोग रोग को देत है, और देत संताप।
तांते त्यागे भोग को, टेऊँ कर हरि जाप।934।
कह टेऊँ मत भूलिये, देख जगत जिनसार।
मिथ्या मानो स्वपन सम, पुन मरुस्थल वार।935।
कह टेऊँ इस जगत में, देखा सुखी न कोय।
भूप बली पंडित गुनी, सब ही दुख से रोय।936।
जग की बहू विधि वासना, जब तक है मन माहिं।
टेऊँ तब तक जीव यह, मुक्ती पावत नाहिं।937।
कह टेऊँ त्रिलोक में, जे चाहो विश्राम।
माया ममता मोह तज, हरि सुमरो निष्काम।938।
अविनाशी इस हंस को, अमर लोक का जान।
कह टेऊँ तन पिंजरे, कुछ दिन है महिमान।939।

दीपक लेकर खोजिये, तम में खोजो नाहिं।
कह टेऊँ दीपक बिना, भरमत बहु तम माहिं।940।
कर्म कीच से मोह मल, उतरत कबहुं नाहिं।
कह टेऊँ जल ज्ञान से, रहत न मल मन माहिं।941।
ब्रह्म ज्ञान के नीर में, श्रद्धा से जो नाय।
जन्म मरन की मल हरे, टेऊँ मुक्त हो जाय।942।
जो करना सो अब करो, अवसर जाता बीत।
कह टेऊँ तुम चेतले, राम नाम जप नीत।943।
जिसी काम के हेत तुम, आये हो संसार।
कह टेऊँ सो ना किया, कैसे होय उद्धार।944।
जोबन में हरि ना भजे, भोगे विषय विकार।
कह टेऊँ सो मूँढ नर, है भूमि पर भार।945।
देश काल और पात्र में, टेऊँ दे जो दान।
तां का बाढ़े दान सो, द्रोपदि चीर समान।946।
दान करो सनमान से, भिक्षक हरि वपु जान।
कह टेऊँ कब ना करो, अतिथि का अपमान।947।
ऊंचा होना चहत जो, सेव करे नर सोय।
कह टेऊँ सेवा बिना, ऊँचा भया न कोय।948।
बीज आक का बोय के, करत आम की आस।
कह टेऊँ संसार में, जानो मूरख तास।949।
मूल छोड़ मति हीन जो, डारी पर जल पात।
कह टेऊँ सो जगत में, कैसे फल को खात।950।

धर्म रूप इक बृछ है, दया ताहिं जड़ जान।
कह टेऊँ फल ताहिं के, यश सुख सम्पति मान।951।
औरहिं शिक्षा देन में, बहुत सयाने होय।
अपना कर्त्तव्य करत जो, टेऊँ विरला सोय।952।
पढ़न सुनन पुन कहन से, मन को शांति न आय।
टेऊँ करनी जो करे, सो नर शांती पाय।953।
टेऊँ गीता में कहा, अर्जुन को भगवान।
धारो अपने धर्म को, चाहो जे कल्यान।954।
कह टेऊँ किस मनुष्य के, दिल को दुःख दे नाहिं।
दुःखी जीव के आह से, नाश होत क्षण माहिं।955।
बूढ़ा झुक कर तूँ किया, खोजत मारग माहिं।
जोबन मोती गिर गया, खोजत मिलत न काहिं।956।
नारायन नैनें बसे, करत सकल प्रकास।
कह टेऊँ सो असंग हो, देखत जगत विलास।957।
नाम चतुर गुन तीन युत, त्रिगुण भाग कर दोय।
कह टेऊँ रह शेष जो, अविनाशी है सोय।958।
नाम त्रिगुण पुन तीन युत, वसुगुण भागा चार।
कह टेऊँ जो शेष रह, सो जग रूप विचार।959।
नाम चतुरगुण एक युत, त्रिगुण भागाचार।
कह टेऊँ जो शेष रह, जग कारक विचार।960।
विषय वासना छोड़कर, धारो मन संतोष।
ज्ञान गेरू को पहन कर, तज ले पाँचो कोष।961।

ज्ञान गेरू को पहन के, मेटे तन अहंकार।
अहं ब्रह्म निश्चय करो, रहे न भेद विकार।962।
अकार उकार मकार मय, तीनों तंत मिलाय।
अर्द्ध सु मात्रा गांठ दे, एह जनेऊ पाय।963।
शिखा सूत्र को छेद गुरु, दीना सोहम नाम।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाया पूरन धाम।964।

यथार्थ वचन

आतम नित्य अनित्य जग, जान विवेक स्वरूप।
त्याग भोग दुइ लोक के, यह विराग का रूप।965।
कह टेऊँ नित्य प्रति धर, परंब्रह्म का ध्यान।
हो जाओ तुम ब्रह्म मय, यों कह संत सुजान।966।
निर्भय हो भय ना करो, काहूँ की मन माहिं।
टेऊँ आतम अमर तूँ, देह खेह तूँ नाहिं।967।
परम तीर्थ है आतमा, कहते वेद पुरान।
अंतर मुख हो तांहि में, टेऊँ करो स्नान।968।
इड़ा पिंगला सुषुम्ना, पावन परम प्रयाग।
कह टेऊँ सो नावहीं, जांके पूरब भाग।969।
इस त्रिवेणी बीच में, डुबकी मारे कोय।
जिस पर गुरु कृपा करे, टेऊँ नावे सोय।970।
त्रिवेणी के तीर पर, पाया दिव्य दीदार।
टेऊँ ऊप न कह सकूं, महिमा अपर अपार।971।

टेऊँ आतम भानु का, है सबमें प्रकास।
मूँढ उल्लू देखत नहीं, देखत ज्ञानी तास।972।
जांकी आतम देव में, वृत्ती स्थित होय।
कह टेऊँ सुख सेज पर, नित ही सोवत सोय।973।
आतम अक्रिय अचल है, करता भोक्ता नाहिं।
टेऊँ सो आवत नहीं, जन्म मरन के माहिं।974।
आतम लाल अमोल है, परख सके ना कोय।
कह टेऊँ सो परखहीं, जो गुरु सेवक होय।975।
आतम हीरा नित बसे, सर्व घटों के माहिं।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, कोऊ पावत नाहिं।976।
ब्रह्म भवन में जायके, जिसने किया निवास।
कह टेऊँ तिस पुरुष की, टूटी जम की फास।977।
सर्व जीव संसार के, सुख चाहत दिन रैन।
कह टेऊँ निज ज्ञान बिन, कोय न पावत चैन।978।
ज्ञान बिना नर मूंढ है, ज्ञान बिना पशु जान।
कह टेऊँ निज ज्ञान जिंह, सो नर देव समान।979।
पूरन आतम ज्ञान से, होवहिं भ्रम जब नाश।
कह टेऊँ तब ही मिले, पूरन पद अविनाश।980।
ज्ञान बिना हटता नहीं, आवरण का व्यवधान।
कह टेऊँ जिमि भानु बिन, मिटे न तिमिर महान।981।
टेऊँ आतम ज्ञान से, निज स्वरूप पछान।
ब्रह्मानंद में मगन हो, कर अपना कल्यान।982।

निष्ठा आतम ज्ञान में, त्याग विषय मन खेद।
टेऊँ मार्ग मोक्ष का, यही बतावत वेद।983।
कह टेऊँ ब्रह्म ज्ञान से, दूर करो अज्ञान।
मनो नाश क्षय वासना, कर पाओ कल्यान।984।
ब्रह्म ज्ञान को पाय जिहं, तन मन पावन होय।
कह टेऊँ तज विषय सुख, लेत ब्रह्म सुख सोय।985।
दु:ख बिन सुख स्वरूप है, आतम ब्रह्म निर्धार।
कह टेऊँ तिहं पाइके, आवागमन निवार।986।
सुख सागर इक ब्रह्म है, दु:ख मय सब संसार।
टेऊँ जग बंधन हरे, करले ब्रह्म विचार।987।
सब फुरनों को रोक कर, कीजे तत्त्व विचार।
क्या मैं हूँ क्या ब्रह्म है, क्या है यह संसार।988।
भो भगवन तुम अमित मति, मैं हूं शिष्य अजान।
ना जानत मैं कौन हूं, हे गुरु परम सुजान।989।
सत् चित आनन्द एक तूँ, ब्रह्म अद्वय निर्धार।
ना तूँ देह न इन्द्रिय है, ना तूं कोष विकार।990।
असंग तूँ है देह से, तूं ही धारत देह।
देह नहीं तूँ ब्रह्म है, ज्ञान दृष्टि धर लेह।991।
तीन देह से रहित तुम, तीन देह आधार।
ब्रह्म रूप हो तुम सदा, जामें फेर न फार।992।
निज स्वरूप भुलाय जो, जानत निज को गात।
कह टेऊँ वो मूँढ नर, रोवत है दिन रात।993।

ब्रह्म रूप कर आत्मा, जाना जिसने आप।
कह टेऊँ त्रिलोक में, तांको लगे न ताप।994।
आतम आनन्द रूप है, माया दुखमय जान।
कह टेऊँ माया तजे, आतम का धर ध्यान।995।
सत् चित आनन्द आत्मा, है देवों का देव।
कह टेऊँ औरहिं तजे, करो इसी की सेव।996।
दृष्टा तूँ है सर्व का, दृश्य रूप संसार।
षट् उर्मियों से रहित तूँ, कर देखो वीचार।997।
व्यापक है तूँ विश्व में, विश्व बसे तुझ माहिं।
कह टेऊँ धर क्षुद्रता, दीन होत है काहिं।998।
बन्ध मोक्ष तो में नहीं, नहिं कछु भेद भ्रांति।
देश काल परिच्छेद बिन, तूं है इक रस शांति।999।
जो दीसत सो आप है, दूजा कोई नाहिं।
ज्यों प्रतिबिंब है बिंब का, टेऊँ दर्पण माहिं।1000।

यथार्थ वचन

तुमने खेल रचाया, तुम ही देखन हार।
दृष्टा दृश्य आप हो, कह टेऊँ निर्धार।1001।
ज्यों घट भीतर बाहिरे, इक रस है आकास।
त्यों तेरा है विश्व के, अंतर बाहिर वास।1002।
जेवरि में ज्यों सांप है, त्यों तो में संसार ।
कह टेऊँ सत् रूप तूँ, कल्पित सब आकार।1003।

टेऊँ घट सम देह यह, मिथ्या सो तू नाहिं।
दृष्टा तूँ जड़ देह का, व्यापक है इस माहिं।1004।
कह टेऊँ अज्ञान से, भासत विश्व अनेक।
ज्ञान दृष्टि से देख तूँ, सम्पूरण है एक।1005।
निष्ठा आतम ज्ञान में, त्याग विषय मन खेद।
कह टेऊँ यह मोक्ष का, मार्ग भाखत वेद।1006।
द्वन्द्व भाव से रहित है, साक्षी पद स्वछंद।
कह टेऊँ नित वेद कह, तांको सच्चिदानन्द।1007।
टेऊँ सो पद अकल है, श्वास जहां लय होय।
मन भी लय जहं होवहीं, ब्रह्म पद कहिये सोय।1008।
जैसे ईखहिं मधुरता, घृत दूध के माहिं।
कह टेऊँ त्यों जगत में, ब्रह्म व्यापक आहिं।1009।
जो दृष्टा घट मठहिं का, सो नहिं घट मठ होय।
तैसे दृष्टा देह का, टेऊँ देह न सोय।1010।
पाँच भूत का पूत तन, जड़ परिणामी जान।
चेतन इक रस आतमा, कह टेऊँ तुम मान।1011।
देश काल बिन वस्तु है, चेतन चिद आकाश।
कह टेऊँ सो ब्रह्म सदा, साक्षी स्वयं प्रकाश।1012।
ब्रह्म शिला पर चित्र है, सारा यह संसार।
टेऊँ दोनों एक है, ज्यों अग्नि चिनगार।1013।
ज्यों तन से भिन्न अंग ना, जानत सर्व जहान।
त्यों भिन्न जग नहिं ब्रह्म से, टेऊँ निश्चय जान।1014।

जैसे तरु से नाहिं भिन्न, डार पत्ते फल फूल।
टेऊँ ब्रह्म से भिन्न नहीं, त्यों जग सूक्ष्म थूल।1015।
लाली मैंदी माहिं जिम, त्यों चेतन जग मांहि।
दोनों को इक जान ले, कह टेऊँ भिन्न नाहिं।1016।
दूध माहिं ज्यों घृत है, त्यों ब्रह्म जग में जान।
कह टेऊँ गम तब पड़े, जब हो पूरन ज्ञान।1017।
पारब्रह्म तो निकट है, दूर खोज मत ताहिं।
कह टेऊँ अंतर मिले, बाहर मिलत न काहिं।1018।
तेरे हृदय धाम में, हरि रहता दिन रैन।
कह टेऊँ तिहं ध्यान धर, पाओ चित में चैन।1019।
कह टेऊँ मन मंदिर में, ब्राजत आतम देव।
अंतर मुख अभ्यास कर, पाओ तांका भेव।1020।
आतम घर में जायके, करिये नित विश्राम।
कह टेऊँ तिहं जानिये, आदी अपना धाम।1021।
आदी घर जो आपका, जहां दिवस नहिं रात।
कह टेऊँ तिहं पाइये, मेटे सब उत्पात।1022।
अपने आतम देव का, सुमरन कर दिन रैन।
कह टेऊँ जिहं सुमरते, उपजे चित में चैन।1023।
आतम पद सो जानिये, नाम रूप जिहं नाहिं।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान से, वृत्ति समाओ ताहिं।1024।
सुख को चाहत है सभी, दुःख चाहत नहिं कोय।
कह टेऊँ सुख चहत क्यों, सुख स्वरूप है सोय।1025।

दुख को नर क्यों चहत नहिं, आतम में दुःख नाहिं।
कह टेऊँ निज भ्रम कर, चहत निवृत्ती ताहिं।1026।
सुख है दो प्रकार का, अल्प महद पहचान।
टेऊँ विषय सुख अल्प है, भूमा सूख महान।1027।
जिस सुख को चाहत सभी, सो सुख कैसे होय।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, होत प्राप्त सोय।1028।
सुखमय निज स्वरूप है, जांमें दुःख नहिं लेश।
कह टेऊँ जिम खांड से, कटुता का न अंदेश।1029।
कह टेऊँ मेरी सुनो, सीख जिज्ञासु सार।
जग मिथ्या सत् आतमा, आतम से कर प्यार।1030।

यथार्थ वचन

तूँ ही तो यह जगत है, तुम बिन जग कुछ नांहि।
कह टेऊँ यह समझ के, निश्चय कर मन मांहि।1031।
जीव ब्रह्म का रूप है, अद्वय अखंड अभेद।
टेऊँ जानत संत अस, मूंढ बतावत भेद।1032।
टेऊँ नित जगमग रही, आतम ज्योति अखंड।
तांको प्रत्यक्ष देखले, खोजे अपना पिंड।1033।
मैं से मैं को मार के, मैं का करिये जाप।
टेऊँ मैं को आप लख, मेटो सब संताप।1034।
ज्यों जल जल के साथ मिल, टेऊँ इक हो जाय।
जीव उपाधि छोड़ त्यों, आतम ब्रह्म समाय।1035।

अस्ति भाति प्रिय रूप से, व्यापक है भगवान।
नाम रूप टेऊँ तजे, तांको देख सुजान।1036।
कहो गुरू को ब्रह्म है, क्या माया का रूप।
जग का हेतु कौन क्या, ईश्वर जीव स्वरूप।1037।
मम उर में भासत सदा, भेद मति अज्ञान।
जगत खेद प्रछेद कर, देहि ब्रह्म को ज्ञान।1038।
कहूँ बात सुन शिष्य यह, वेद वाक्य अनुकूल।
इन से जो विप्रीति है, सोय निगम प्रतिकूल।1039।
सत् चित आनंद ब्रह्म इक, है इस जग का मूल।
टेऊँ तांका विवर्त है, जग सूक्ष्म स्थूल।1040।
सब से पहिले ब्रह्म था, एक अखंड अपार।
तांकी इच्छा से बना, टेऊँ यह संसार।1041।
जीव ईश के भेद बिन, चेतन इक रस जोय।
तांके आश्रित रहत इक, सांत अनादि सोय।1042।
मिथ्या अनिर्वचनीय सत्, असत् विलक्षण जान।
ब्रह्माश्रित ब्रह्म को ढपे, माया तिहं पहचान।1043।
ब्रह्म शक्ति प्रकृति है, तम रज सत्त्व समान।
तीन रूप है तास के, वेदनि किया वख्यान।1044।
टेऊँ माया अविद्या, तृतीय तम प्रधान।
ईश जीव पुन पांच तत, इनसे भये सुजान।1045।
शुद्ध सत्व है माय पुन, मलिन अविद्या मान।
तम गुण जिसमे मुख्य हो, तम प्रधान तिहं जान।1046।

माया में आभास पुन, अधिष्ठान ब्रह्म होय।
टेऊँ ईश सर्वज्ञ जो, जग हेतू है सोय।1047।
मलिन सत्त्व अज्ञान में, व्यापक ब्रह्म आभास।
अधिष्ठान कूटस्थ युत, जीव कहत है तास।1048।
कह टेऊँ सत्गुरु सुनो, करूँ विनय मैं तोहि।
देह किती कैसे बनी, कह समझावो मोहि।1049।
कारन सूक्ष्म थूल यह, जानो तृतीय देह।
कह टेऊँ जैसे बनी, सो शिष्य तुम सुन लेह।1050।
जीव उपाधि जा अहै, मलिन सत्त्व अज्ञान।
तांको कारन देह कह, मुनिवर संत सुजान।1051।
टेऊँ तम प्रधान से, भये भूत विस्तार।
नभ वायु पुन अग्नि जल, पंचम भूमि अकार।1052।
भये प्रगट इन पांच से, सत्त्व इन्द्रिय अरु प्रान।
भूत अपंचीकृत मिल, सूक्ष्म देह पछान।1053।
सुख दुःख राग द्वेष पुन, सर्व द्वन्द्वता माहिं।
टेऊँ आवत जात पुन, भोग करण लख ताहिं।1054।
भोग करण किस भांति है, गुरू बताओ मोहि।
सुन शिष्य तुम चित लाय के, कहूँ त्रिपुटी तोहि।1055।
इन्द्रिय देवता विषय मिल, त्रिपुटि कहिये तात।
अन इनके निर्णय सुनो, कह टेऊँ पा ज्ञाति।1056।
मन इन्द्रिय इन्दु देवता, संकल्प क्रिया जान।
बुद्धि इंद्रिय सुर वृहस्पति, निश्चय विषय पछान।1057।

चित्त इन्द्रिय हरि देवता, चिंतन क्रिया होय।
अहं इन्द्रिय सुर रुद्र पुन, विषय अहंता जोय।1058।
श्रोत्र करण दिगपाल सुर, श्रवण क्रिया स्वरूप।
नेत्र करण रवि देवता, क्रिया देखन रूप।1059।
घ्राण करण सूंघन क्रिया, सुर अश्वनी कुमार।
जीभ करण जल देवता, क्रिया रस संसार।1060।

यथार्थ वचन

त्वक् करण सुर पवन है, क्रिया स्पर्श गात।
वाक करण सुर अग्नि है, क्रिया बोलन बात।1061।
हाथ करण सुर इन्द्र है, क्रिया लेना देन।
पाद करण उपइन्द्र सुर, क्रिया गमन दिन रैन।1062।
लिंग करण अज देवता, विषय काम अनुराग।
करण गुदा यम देवता, क्रिया मल का त्याग।1063।
पंचीकृत तत पंच की, पच्चीस प्रकृति जोय।
सो कहिये स्थूल तन, भोग स्थान लख सोय।1064।
शोक काम और क्रोध पुन, मोह रु भयता वास।
वा शिर कण्ठ उर उदर पुन, कहिये तत आकास।1065।
प्रसारण धावन वलन, चलन आकुंचन जान।
पांच तत्व ये पवन के, कह टेऊँ पहचान।1066।
नींद पिपासा भूख पुन, क्रांति अरु आलस्य।
पांच तत्व ये तेज के, कह टेऊँ नहिं संशय।1067।

लार पसीना मूत्र पुन, शुक्र रक्त ये पांच।
जानो जल के तत्त्व यह, वेद बतावत सांच।1068।
रोम त्वचा नाड़ी अहै, मांस अस्थि को जान।
कह टेऊँ भू तत्त्व यह, पंचीकरण पछान।1069।
एक एक तत भेद को, सुनिये शिष्य सुजान।
श्रवण कर पुनि मनन कर, पाओ तत्त्व विज्ञान।1070।
गुरू शब्द मठ रंग पुन, कहूँ स्वभाव गुंन स्वाद।
धर्म स्वरूप द्वार पुन, रूप करो यह याद।1071।
कह टेऊँ अब व्योम के, करहुँ अंग बखान।
गुरू निरंजन शब्द धुनि, मस्तक मठ पहिचान।1072।
नीला रंग स्वभाव सुन, जान शब्द गुन जास।
फीका स्वाद रु लोभ धर्म, स्वरूप है अवकास।1073।
श्रवन वाक दो द्वार पुन, सर्व पूर्ण है रूप।
एते अंग अकास के, अब सुन पवन स्वरूप।1074।
गुरु हरि सोहम शब्द पुनि, नाभ स्थान बताव।
हरा रंग गुन स्पर्शा, निस्पंद स्पन्द स्वभाव।1075।
आमल स्वाद रु काम धर्म, जानो वेग स्वरूप।
त्वक् हस्थ दो द्वार पुन, सर्व चेतन है रूप।1076।
अंग तेज के अब कहूँ, सुनो शिष्य दे कान।
गुरू रवि भुक भुक शब्द है, पितु तांका स्थान।1077।
कह टेऊँ रंग लाल है, उष्ण स्वभाव गुन रूप।
कड़वा स्वाद रु कोप धर्म, पुन दहन स्वरूप।1078।

लोचन चरन द्वार दो, सर्व प्रकाशक रूप।
कह टेऊँ अब कहत हूँ, जल के अंग अनूप।1079।
गुरु चन्द्र चुल चुल धुनी, जान भाल स्थान।
श्वेत रंग गुन रस कहे, शीत स्वभाव पछान।1080।
स्वाद मृदु स्नेह धर्म, द्रवता जान स्वरूप।
जिह्वा लिंग है द्वार दो, सर्वोतम है रूप।1081।
कह टेऊँ अब भूमि के, करहूं अंग बयान।
गुरू वरुण कटि कटि शब्द, तांहि कमर है थान।1082।
पीला रंग स्वभाव जड़, जान गंध गुन आहिं।
सब रस स्वाद गर्व धर्म, कठिन सरूप सुजाहिं।1083।
घ्राण गुदा दो द्वार है, रूप सर्व आधार।
कह टेऊँ तत पांच के, अंग एह निर्धार।1084।
मिथ्या जड़ दुःख थूल तन, दृश्य अनातम आहिं।
सतचित आनन्द एक तूं, टेऊँ दृष्टा ताहिं।1085।
अविद्या कारन देह है, सत्रह तत लिंग देह।
पंच भूत का थूल तन, पंच कोष सुन लेह।1086।
अन्नमय मनमय प्रानमय, विज्ञान मय आनन्द।
पंच कोष ये जान तुम, त्यागे हो निर्द्वन्द्व।1087।
अन्नमय कोष स्थूल तन, टेऊँ प्रत्यक्ष जान।
लिंग तन प्रान विज्ञान मन, कारण आनन्द मान।1088।
मात पिता के मेल से, उत्पन्न भयो तन जोय।
पच्चीस प्रकृति जासु में, अन्न कोष है सोय।1089।

टेऊँ पाँचो प्रान पुनि, कर्म इन्द्रिय को मेल।
कोष प्रानमय कहत तिहं, यह सिद्धान्त अपेल।1090।
ज्ञान इन्द्रिय मन मेल को, मनमय कोष पछान।
ज्ञान इन्द्रिय बुद्धि मेल को, कहते कोष विज्ञान।1091।
इष्ट वस्तु की चाह प्रिय, प्रापति मोद प्रमोद।
सुषुपति सुख को कहत है, कोष अनन्दमय शोध।1092।
पंच कोष पुन देह तिन, जड़ दुःख मिथ्या जान।
सत् चित आनन्द रूप तूं, घट दृष्टा प्रमान।1093।
तीन अवस्था देह त्रिय, भोक्ता भोग्य रु भोग।
तूं है साखी सर्व का, आनन्द रूप अरोग।1094।
नाम रूप वर्ण आश्रम, जाति पाति पुन कर्म।
जनम मरण परिणाम ये, थूल देह के धर्म।1095।
जनम मरण है धर्म तन, भूख प्यास है प्रान।
हर्ष शोक मन करत है, बुद्धि विवेक प्रधान।1096।
चित्त चितवन नित करत है, अहं धर्म अभिमान।
दृष्टा प्रेरक सर्व का, सो साखी भिन्न जान।1097।
हर्ष शोक मन में रहे, सो यह मन तूं नाहिं।
करता में बंध मोक्ष है, ना तूं करता आहिं।1098।
शुभाशुभ दो अवस्था, अन्तः करण की जान।
साक्षी इन प्रकाश दे, उदासीन पहिचान।1099।
जनम मरण है देह में, नां तूं देह सुजान।
भूख प्यास है प्रान के, ना तूं पंच प्रान।1100।

समष्टि व्यष्टि तीन तन, पंच कोष संसार।
आतम सबमें एक है, मिथ्या सब आकार।1101।
ज्यों पुष्पों के माल में, पुष्पों का व्यभिचार।
तागा है अनुस्यूत तिम, आतम कोष विचार।1102।
जैसे भासत रज्जु में, तरु जड़ सर्प दरार।
तिम आतम में भासते, पांचो कोष विकार।1103।
रज्जु अनुस्यूत कल्पित में, कल्पित है व्यभिचार।
तैसे आतम सर्व में, कल्पित है संसार।1104।
मिथ्या के तुम नास की, करते हो क्यों आस।
इन्द्र जाल के शत्रु को, करत न कोई नास।1105।
सकले दुःख हैं भेद में, अभेद में कछु नाहिं।
कह टेऊँ सब ब्रह्म है, सुख स्वरूप लख ताहिं।1106।
एक विभू सब द्वन्द्व बिन, निर्गुन तम पर जान।
अज अविनाशी आत्मा, टेऊँ सब घट जान।1107।
जो परब्रह्म सर्वातमा, व्यापक विश्व आधार।
सूक्ष्म ते सूक्ष्म अती, सो तूँ है निर्धार।1108।
उलटा कर हंसो जपो, सतगुरु से ले ज्ञान।
कह टेऊँ इस जाप से, पाओ पद निर्बान।1109।
हंसो का स्मरण करो, समझ हंस का सार।
कह टेऊँ पुनि पाइये, आत्म पद निर्धार।1110।

अमर कथा जो जन सुने, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ निश्चय वही, भव सिन्धु से हो पार।1111।
बालक वानर दामिनी, मखी करी के कान।
जैसे ये चंचल सदा, तैसे मन को जान।1112।
सतगुरु की कृपा बिना, मन जीता नहिं जाय।
टेऊँ मन जीते बिना, कबहुं शान्ति न आय।1113।
कह टेऊँ मन की गति, चंचल है बलवान।
विरला तांको जानता, वैरागी विद्वान।1114।
कह टेऊँ मन की गति, अधिक पवन से जान।
तांको जो जन वस करे, सोई पुरुष सुजान।1115।
कह टेऊँ मन की गति, चलती आठों याम।
जो जीते सो पावहीं, अमरापुर का धाम।1116।
जहं मन है तहं जगत है, मन बिन जग कुछ नाहिं।
कह टेऊँ मन अमन से, सब परमातम आहिं।1117।
मन राजा से युद्ध करे, बहुत गये जन हार।
टेऊँ जीते ताहिं जो, तां पर मैं बलिहार।1118।
मन राजा को जीतना, बहुत कठिन है काम।
कह टेऊँ जो जीतले, पहुँचत सो निज धाम।1119।
मन राजा को देखके, बहुत गये घबराय।
टेऊँ तांकी वीरता, मुख से कही न जाय।1120।
मन राजा को जीतना, सुगम नहीं है तात।
कह टेऊँ यह नीति बिन, लड़ता है दिन रात।1121।

मन दुश्मन को जीतके, पाय अचल स्वराज।
कह टेऊँ नर देह में, निर्भय होकर राज।1122।
विवेक वर वैराग से, जीते मन मस्तान।
कह टेऊँ तुम पाइये, ब्रह्मानन्द महान।1123।
हरि माया ने मोहिया, कह टेऊँ सब लोक।
भोग विषय भ्रमायके, दिया हर्ष अरु शोक।1124।
हरि की माया करत है, निशिदिन खेल नवीन।
देख तिसे फस जात बहु, कह टेऊँ प्रवीन।1125।
हरि की माया देखके, मूढ़ भये मस्तान।
कह टेऊँ सोचे बिना, पावत दूख महान।1126।
सतगुरु की कृपा बिना, होय न हरि से मेल।
कह टेऊँ है वेद का, यह सिद्धान्त अपेल।1127।
गुरु कृपा बिन ब्रह्म की, निष्ठा हो कब नाहिं।
कह टेऊँ निष्ठा बिना, भटकत नर भव माहिं।1128।
बादल सम सतगुरु सदा, करत ज्ञान गजकार।
कह टेऊँ सत् वचन की, बरसत बूंद अपार।1129।
पशुओं से मानुष किया, मानुष से फिर देव।
कह टेऊँ गुरुदेव से, कीना अलख अभेव।1130।
सतगुरु सम केवट नहीं, देखा जगत मंझार।
कह टेऊँ भव सिन्ध से, सबको करहैं पार।1131।
स्मरण कर गुरु शब्द का, जग से होय उदास।
कह टेऊँ मन थिर करे, पाओ सुख अविनास।1132।

गुरु की वाणी जान तुम, सतगुरु का है रूप।
कह टेऊँ पढ़ प्रेम से, पाओ सुख स्वरूप।1133।
गुरु वाणी गुरु रूप है, तीर्थ गुरु स्थान।
कह टेऊँ शुभ भाव धर, पाओ शान्ति महान।1134।
सब गुण सम्पन्न हैं सदा, सन्त गुरु भगवान।
कह टेऊँ गुण ग्रहण कर, तीनों को इक जान।1135।

यथार्थ वचन

शब्द गुरु परमात्मा, तीनों एक स्वरूप।
कह टेऊँ जिनकी सदा, महिमा अगम अनूप।1136।
पूरण आतम पद विषे, स्थिति जांकी होय।
कह टेऊँ इस जगत में, मुक्ति पावत सोय।1137।
पूजो आतम देव को, जो है तेरा रूप।
कह टेऊँ जिस वेद कह, अगम अनादि अनूप।1138।
नाम रूप को छोड़ जो, कह टेऊँ रह शेष।
तांको अपना रूप लख, मेटो सर्व क्लेश।1139।
पहले अपने आप में, करले हरि दीदार।
कह टेऊँ फिर सर्व में, देखो सत्कर्तार।1140।
कह टेऊँ सब त्यागके, करो त्याग का त्याग।
त्याग बिना नहिं होत है, आतम में अनुराग।1141।
आतम के अनुराग बिन, होय न आतम ज्ञान।
ज्ञान बिना मुक्ति नहीं, कहते वेद पुरान।1142।

व्रत नेम जप योग तप, यह सब नीके काम।
पर साधन को और जिंह, मिलत है आतम राम।1143।
सो साधन तुम पायले, जाकर सतगुरु पास।
कह टेऊँ तिंह साधके, करिये ब्रह्म निवास।1144।
टेऊँ अमृत ज्ञान का, पी तृपति हो जाय।
तन मन की तृष्णा हरे, आनन्द माहिं समाय।1145।
भगवत मग में छोड़के, आगे चले सुधीर।
मैं तू की जहं गम नहीं, ताहिं गये गम्भीर।1146।
अपना आप भुलायके, याद किया परिवार।
कह टेऊँ इस कारणे, दुःखी भया संसार।1147।
अपना आप भुलायके, भटकत है भव माहिं।
कह टेऊँ सत् लोक लौं, सूख मिलत कब नाहिं।1148।
अपना आप भुलायके, दुःखी भया दिन रात।
कह टेऊँ देखी नहीं, अपनी जाति सनाति।1149।
निज स्वरूप भुलाय जो, देखत नाना रूप।
टेऊँ सो वीचार बिन, पड़े भ्रम के कूप।1150।
बहु साधन नर करत है, शान्ति हेतु जग माहिं।
कह टेऊँ मन शान्ति बिन, शान्ति न पावत काहिं।1151।
निर्मल मन चित करन हित, है इक हरि का ध्यान।
कह टेऊँ हरि ध्यान कर, पाओ शान्ति महान।1152।
कह टेऊँ हरि मिलन के, मार्ग बहु जग जान।
सब मार्ग में एक ही, सत्संग है प्रधान।1153।

हृदय में हरि ध्यायके, पाओ सुख की रास।
कह टेऊँ हरि ध्यान से, सुख दुःख होवे नास।1154।
सब जग देखा खोज के, हरि सम कोऊ नाहिं।
तांते तुम प्रीती करो, कह टेऊँ हरि माहिं।1155।
हरि आनन्द स्वरूप है, मुक्ति भक्ति जिंह पास।
कह टेऊँ तिस पाइये, तजे जगत की आस।1156।
जिसके मन में प्रेम है, हरि मिलने का मीत।
कह टेऊँ तिंह हरि मिले, राखो यह प्रतीत।1157।
हरी शरण में पतित भी, पावन ही बन जात।
कह टेऊँ तांते गहो, हरि शरणी तुम तात।1158।
हरि भक्ती शुभ कर्म का, द्रव्य जिसी के पास।
कह टेऊँ तिस जीव के, दूःख भूख हो नास।1159।
जिसमें हरि राजी रहे, कर्म करो सो मीत।
कह टेऊँ तज और को, करिये हरि से प्रीत।1160।
देह देवालय में बसे, साक्षी चेतन देव।
कह टेऊँ तिहं सुमरके, पाओ सूख अखेव।1161।
दुःख भंजन भगवान का, नाम रटो दिन रात।
कह टेऊँ संसार में, होवे तव कुशलात।1162।
दुःख भंजन हरि छोड़के, और तरफ जो जाय ।
टेऊँ सो भटकत रहे, सूख न कबहूं पाय।1163।
पाप तजे पूण्य को करो, जे हित चाहो आप।
कह टेऊँ हरि जाप कर, मेटो सब सन्ताप।1164।

विषय भोग संसार के, देते द्वन्द्व क्लेश।
कह टेऊँ हरि भक्तिबिन, सूख न मिलता लेश।1165।
सुख के साधन जे कहे, सन्तनि ग्रन्थों माहिं।
कह टेऊँ गुरु नाम सम, अरु कोई जग नाहिं।1166।
कह टेऊँ गुरु नाम ही, पाप करत परिहार।
भव सागर से जीव को, तुरत उतारत पार।1167।
एक पिता परमात्मा, हम सब बालक तास।
कह टेऊँ हरि साथ है, क्यों हम मानें त्रास।1168।
राम रक्षा जांकी करे, ताहिं न को दुःख होय।
कह टेऊँ भय त्याग के, निर्भय रहता सोय।1169।
प्रभू परीक्षा लेत है, भक्तों की जग माहिं।
टेऊँ साचे भक्त जे, वे कब डोलत नाहिं।1170।
भक्तों के वश में रहे, कहे टेऊँ भगवान।
योग क्षेम तांका करे, दे सुख सम्पति मान।1171।
भगवत अपने दास का, निशदिन है रख वार।
कह टेऊँ भूलत नहीं, हरदम करत सम्भार।1172।
कह टेऊँ भगवान को, चाहत भक्त सुजान।
निशदिन भगवत चरण में, प्रेम करत प्रधान।1173।
भक्तनि अरु भगवान में, रंचक नाहीं भेद।
कह टेऊँ हरि भजन कर, हरि से भये अभेद।1174।
जिस कार्य हित मनुष तन, पाया इस जग माहिं।
कह टेऊँ प्रमाद से, सो तुम कीना नाहिं।1175।

यथार्थ वचन

देह महल में बैठके, कीनी मौज महान।
अब तो यह पुराना भया, करना है गुजरान।1176।
इक दिन गिरना अवसि है, इस पर नहिं विश्वास।
कह टेऊँ भलि युग रहे, आखिर होगा नास।1177।
बन्दर की बाजार तुम, जानो सन्तनि संग।
कह टेऊँ जिस देखते, मन में होय उमंग।1178।
बन्दर की बाजार में, सौदा करत सुजान।
कह टेऊँ परलोक में, पावत सूख महान।1179।
बन्दर की बाजार में, करहो तुम व्यापार।
कह टेऊँ जिसके किये, होवे मंगलाचार।1180।
बन्दर की बाजार में, हीरा मोती लाल।
कह टेऊँ जा लीजिये, लेकर चतुर दलाल।1181।
दलाल बिन सौदा कच्चा, बनता कबहूँ नाहिं।
सन्त ग्रन्थ यों कहत हैं, निश्चय कर मन माहिं।1182।
दिन को जल्दी जाय कर, वणज करो वीचार।
कह टेऊँ पुनि रात को, होगी बन्द बाजार।1183।
राम नाम का वणज ले, बहुत लाभ जिस माहिं।
कह टेऊँ दिन दिन बड़े, घटता कबहूं नाहिं।1184।
राम नाम की औषधी, खाइये नित ही मीत।
कह टेऊँ दुख दूर हो, राखो मन प्रतीत।1185।

बसन्त ऋतु के मौज को, जानत है भवरंग।
कह टेऊँ मन में जिसे, होवत महा उमंग।1186।
जाग्रत स्वप्न नींद नहिं, नाम जहां नहिं रूप।
कह टेऊँ सो जानिये, आतम पद अनूप।1187।
मानुष चोला तुझ मिला, जिसी काम के हेत।
कह टेऊँ सो ना किया, अजहूँ भया अचेत।1188।
धन पुत्रों के जगत में, बहुत प्यासी होय।
कह टेऊँ भगवन्त का, बिरला देखा कोय।1189।
प्रेम सच्चा बढ़ता रहे, जो कब घटता नाहिं।
कह टेऊँ दुख सूख में, इक रस रह मन माहिं।1190।
अपनी महिमा ना करो, अपने मुख से मीत।
नेक काम जग में करे, टेऊँ न आनो चीत।1191।
मंगते से मत मांगिये, मंगता खुद पेनार।
टेऊँ हरि से मांग जो, सबको देवन हार।1192।
सत्संग हरि कीर्तन जहां, नहिं अतिथी सत्कार।
कह टेऊँ सो जानिये, घर मन्दिर बेकार।1193।
पहले मन में समझले, सन्त वचन का सार।
कह टेऊँ फिर रहति रह, अपना करो उद्धार।1194।
पहले अपने आप पर, करत कृपा जन जोय।
कह टेऊँ तिस मनुष पर, सबकी कृपा होय।1195।
बालापन खेलन गया, यौवन भोगे भोग।
कह टेऊँ बूढ़े भये, लागा तृष्णा रोग।1196।

तीनों पन ऐसे गये, तोहे न आई लाज ।
कह टेऊँ जग आयके, किया न अपना काज ।1197।
कनक कामिनी देह में, जांका बहुत प्यार।
कह टेऊँ दुख पाय सो, जाकर नरक द्वार ।1198।
कनक कामिनी देह से, त्याग दिया जिहँ राग।
कह टेऊँ दुइ लोक सो, सुख पावत बड़भाग ।1199।
सब्र शुक्र जिस जन करा, त्यागे तन अभिमान।
कह टेऊँ तिस पुरुष पर, प्रसन्न हो भगवान ।1200।
तीन कर्म नित ही करो, भजन दान इस्नान।
कह टेऊँ इन तीन से, कलि में हो कल्यान ।1201।
स्वार्थ के सब मित्र हैं, देखा जग को छान।
बिन स्वार्थ भगवन्त इक, कह टेऊँ सत् मान ।1202।
मान स्वार्थ त्याग के, करहो तुम मेलाप।
कह टेऊँ सुख दे सबहिं, मेटो निज सन्ताप ।1203।
पुरुषार्थ अरु प्रारब्ध, जब दोनों कर मेल।
कह टेऊँ तब चलत है, सर्व जगत का खेल ।1204।
देह गेह में नेह कर, क्यों दुख पाय अनन्त।
कह टेऊँ ममता तजे, निशदिन भज भगवन्त ।1205।
हरि कृपा शुभ कर्म से, मिला मनुष तन एह।
कह टेऊँ हरि स्मरके, पाओ सुख का गेह ।1206।
शुभ कर्मों से शुभ गती, पावत है सब लोक।
तांते तुम शुभ कर्म कर, कह टेऊँ हर शोक ।1207।

मनुष वही जग जानिये, दया धर्म जिस माहिं।
टेऊँ सबका हित करे, सन्त सराहत ताहिं।1208।
हानि लाभ में सम रहे, हर्ष शोक जिहं नाहिं।
कह टेऊँ संसार में, सन्त पछानो ताहिं।1209।
जीवन मुत्ती सन्त जन, दिल के बड़े उदार।
कह टेऊँ व्यवहार में, होवत सदा बहार।1210।
सबमें गोविन्द रम रहा, सब गोविन्द के रूप।
कह टेऊँ यह भावना, हृदय राख अनूप।1211।
हम आये तव शरण में, राखो हमरी लाज।
कह टेऊँ निज दास लख, करिये पूर्ण काज।1212।

मुक्तिमणी प्रश्नोत्तरी

भवजल कैसे उतरिये, चढ़ो नाव हरि ध्यान।
केवट तिसका कौन है, पूरण गुरु पहिचान।1।
लाभ किसी से होत है, सत्संग से निर्धार।
हानि किसी से होत है, मूर्ख संग मंझार।2।
शोभादायक कौन है, प्रेम सरलता शील।
शोभा नाशक कौन है, क्रोध कुटिलता टील।3।
प्रसन्न किस पर होत हरि, दम्भ बिना जो भक्त।
कोप करे किस पर हरि, जो दम्भ युत आसक्त।4।
वीर किसी को कहत हैं, जीते मन को जोय।
है कायर को जग में, मन आधीन जो होय।5।

पुरुष विवेकी कौन है, सत्य असत्य जो जान।
मूँढ़ जगत में कौन है, जिहँ न विवेक विज्ञान।6।
भक्ति किस को कहत हैं, हरि गुरु से हो प्यार।
मोह किसी को कहत हैं, होय प्रीति परिवार।7।
निश दिन प्रसन्न रहत को, राग द्वेष जिहं नाहिं।
अहनिश रोता कौन है, राग द्वेष मन जाहिं।8।
निर्भय रहता कौन है, वैरागी निष्काम।
डरता मन में कौन है, जो रागी सहकाम।9।
जीता जग में कौन है, जाँका यश जग माहिं।
मृतक मानुष कौन है, जग में अपयश जाहिं।10।
साचा साधू कौन है, जांका श्रेष्ठ अचार।
कौन असाधू जगत में, जिसका भ्रष्ट अचार।11।
तुल्य अनल के कौन है, ईर्ष्या काम रु क्रोध।
जल के सदृश कौन है, शान्ति शील निज बोध।12।
सेवा कितने भांति की, तन मन धन वच जान।
सेवा किस विधि कीजिये, हो निष्काम अमान।13।
पूरा शिष्य को जगत में, गुरु आज्ञा जो मान।
काहिं मुमुक्षू कहत हैं, जो चह मोक्ष महान।14।
मुक्ति देत को जगत में, ब्रह्म ज्ञान वैराग।
बंधन दायक कौन है, अविद्या जग में राग।15।
सुखी सदा को रहत है, जाँको सत् वीचार।
रहत दुःखी को जगत में, बिन वीचार गंवार।16।

सदा अरोगी कौन है, चिंता जिसको नाहिं।
को रोगी संसार में, चिंता व्यापे जाहिं।17।
नर्क द्वारा कौन है, काम क्रोध पुनि लोभ।
स्वर्ग द्वारा कौन है, दान दमन बिन क्षोभ।18।
बुरी व्यसन जग कौन है, एक पिशुनता जान।
बुद्धि को पागल करे, बहुत सुरा का पान।19।
पुण्य बढ़े को जगत में, करना पर उपकार।
पाप बढ़े को जगत में, करना पर अपकार।20।
प्रिय कौन संसार में, अपना यश पुनि मान।
कौन अप्रिय संसार में, निज अपयश अपमान।21।
धर्म बढ़े किस रीति से, किये दया पुनि दान।
पाप बढ़े किस भांति से, कीने लोभ महान।22।
कैसे नर प्रबीन हो, पढ़े विद्या जो नीत।
मूंढ रहत है जीव को, जिहँ न विद्या से प्रीत।23।
उत्तम भूषण कौन है, सहन शीलता जान।
ज्ञान किसी को कहत हैं, निज स्वरूप पहिचान।24।
निशदिन भ्रमत कौन है, जो नर संशयवान।
निश्चल जन को जगत में, जाँको है दृढ़ ज्ञान।25।
हरदम को दुःख देत है, अपना एक अज्ञान।
नित शान्ती सुख देत को, पूरन आतम ज्ञान।26।
सुख से सोता कौन है, जो जन लाय समाधि।
निद्रा किसको आय नहिं, जां मन माहिं उपाधि।27।

जग में साचा मित्र को, पुरुषार्थ पहिचान।
कौन शत्रु है जीव का, आलस गफलत मान ।28।
नित ही भूखा को रहे, जिहं तृष्णा नहिं तोष।
हरदम तृप्त रहत को, जांके मन संतोष ।29।
मनुष्यों में है देव को, देवी गुन जिस माहिं।
मनुष्यों में है दैत्य को, शुभ गुन जामें नाहिं ।30।
योगी को संसार में, जो मन करे निरोध ।
भोगी को संसार में, जीते कामरु क्रोध ।31।
निरादरी जग सहत को, जो गुणहीन पुमान।
आदर पावत कौन जग, शान्तिवान विद्वान ।32।
अस्थावर में पूज्य को, तुलसी पीपल जान।
पशु पंछिन में देव को, पवन पूत हरियान ।33।
रोग असाध्य कौन है, मद मत्सर पुनि मान।
को भरमावे जीव को, ममत मोह अज्ञान ।34।
दनुजों में हरि भक्त को, विभीषण प्रहलाद।
देवों में भये दनुज को, जय अरु विजय प्रमाद ।35।
जग में गुण है कौन बड़, जीव दया पहिचान।
अवगुन जग में कौन बड़, जीव हिंसा को जान ।36।
कौन मनुज है देव सम, धर्म धरे जन जोय।
कौन मनुज है दनुज सम, धर्म विमुख जो होय ।37।
सफला जीवन होत कब, जब परहित लग जाय।
द्रव्य सफल किमि होत है, जो शुभ मारग आय ।38।

उत्तम नारी का अहै, जा पति आयुस मान।
नीच नारी किस कहत हैं, दे पति दूःख महान।39।
पुरुष जगत में कौन है, जाँको आतम ज्ञान।
योषित किसको कहत हैं, जाँको तन अभिमान।40।
स्वार्थ साथी कौन हैं, मित्र बन्धु परिवार।
बिन स्वार्थ के कौन है, संत गुरू करतार।41।
ईश किसी को कहत है, माय उपाधीवान।
जीव किसी को कहत है, अविद्यावान पछान।42।
पिंगुला को नर जगत में, जो न चले शुभ पंथ।
बहरा काँ को कहत है, जो न सुने सद्ग्रन्थ।43।
मूक जगत में कौन है, करे न हरि गुन गान।
लूला किस को कहत है, करे न सेवा दान।44।
को अन्धा संसार में, बुद्धि नेत्र जिहँ नाहिं।
आंखों वाला कौन है, ज्ञान दृष्टि है जाहिं।45।
जागत को नर जगत में, जिहँ सत् असत् विवेक।
सोया नर को जानिये, जिहं उर है अविवेक।46।
जग में बुद्धिमान को, वेद विहित कर काम।
मूरख जग में कौन है, करे निषिद्ध अपकाम।47।
वेग पवन से जात को, मन को ही पहिचान।
कैसे मन ये थिर रहे, धारे उपशम ज्ञान।48।
नीच कर्म को जगत में, पर निंदा को जान।
श्रेष्ठ कर्म जग कौन है, दे वैरी सन्मान।49।

शीलवंत नर कौन है, जो न चितै पर नार।
नीच मनुष्य को जगत में, बुरी दृष्टि जो धार।50।

मुक्तिमणि प्रश्नोत्तरी

ऊँच वर्ण को जगत में, जो सुमरे हरि नाम।
नीच वर्ण किस जानिये, जो न भजे श्रीराम।51।
मन को कैसे जीतिये, धर वैराग अभ्यास।
भ्रम तिमिर हो नाश किमि, होवे ज्ञान प्रकाश।52।
होय विकार विनाश किमि, तर तीबर वैराग।
दर्शन हरि का होय किमि, कर हरि पद अनुराग।53।
अमृत से अति मधुर को, एक हरी का नाम।
विष से तीक्ष्ण कौन है, क्रोध कामिनी काम।54।
ब्रह्मचारी जग में कौन है, अष्ट भोग कर त्याग।
गृहस्थी को संसार में, दया धर्म जो लाग।55।
वानप्रस्थ को जगत में, बन में करे अभ्यास।
सन्यासी जग कौन है, जाँका ब्रह्म निवास।56।
प्रेम प्रकाशी कौन है, जिस घट प्रेम प्रकाश।
त्यागी किस को कहत हैं, जिहँ न देह अध्यास।57।
है साचा गुरुदेव को, जो दे आतम ज्ञान।
पूरन ज्ञानी कौन है, जो निर्भय निर्मान।58।
धनी जगत में कौन है, हरि धन जाँके पास।
दरिद्र जग में कौन है, जो माया का दास।59।

लक्ष्मी कहँ वासा करे,धर्म दया जहँ होय।
दरिद्रता कहँ रहत है, नीच कर्म कर जोय।60।
कैसे यह चित शान्त हो, त्यागे जग की आस।
कैसे जग में होय यश, प्रेम नम्रता पास।61।
है दर्शन के योग्य को, संत गुरू पुनि राम।
नहिं देखन के योग्य को, निगुरा नमक हराम।62।
ग्रहण किसका कीजिये, भक्ति ज्ञान गुण सार।
त्याग किसी का कीजिये,अवगुन विषय विकार।63।
श्रवण योग क्या जगत में, संत वेद गुरु ज्ञान।
क्या नहिं श्रवण कीजिये, निंदा विषय वख्यान।64।
कौन बोल मुख बोलिये, सत्य प्रिय जो जोय।
क्या नहिं बोलन योग्य है, झूठा कड़ुवा होय।65।
कौन पूजने योग्य है, इष्ट संत गुरुदेव।
कौन तरत संसार से, जाँको आतम भेव।66।
कौन सराहन योग्य है, उपकारी हरिदास।
कौन निंदने योग्य है, जाँके मन दुर आस।67।
शान्त रहत को जगत में, जिहँ मन नाहिं उपाधि।
कौन जलत है रात दिन, जिहं मन वैर विषाद।68।
कैसे उदय विराग हो, जग से होय गिलान।
नाश होय वैराग्य किमि, पांच विषय संग जान।69।
दानों में बड़ दान को, ब्रह्म ज्ञान का दान।
कौन बड़ा तप जगत में, क्षमा तप पहिचान।70।

उत्तम यज्ञ को जगत में, ब्रह्मज्ञान हरि जाप।
श्रेष्ठ धर्म जग कौन है, जिससे नाशे पाप।71।
कृतघ्न किसको कहत है, जो न मने उपकार।
कृतज्ञ कहते कौन को, माने गुण दातार।72।
उतरे अविद्या मैल किमि, आतम तीर्थ नाय।
आतम तीर्थ किमि मिले, गुरु कृपा से पाय।73।
उत्तम बाणी कौन है, श्रवण से दे शांति।
ज्ञान किसी को कहत है, मेटे भेद भ्रांति।74।
बाप ज्ञान का कौन है, वेद गुरु उपदेश।
दृढ़ ज्ञान किस कहत है, रहे न संशय लेश।75।
सुख दुःख कारन कौन है, कर्म शुभाशुभ जान।
जग का कारण कौन है, एक ईश पहिचान।76।
ईश उपाधि कौन है, शुद्ध माया को जान
जीव उपाधि कौन है, मलिन अविद्या मान।77।
जीव जात परलोक किमि, मृत्यु ही के द्वार।
कौन धाम जहँ काल नहिं, ब्रह्मधाम निर्धार।78।
कैसे आयु बढ़त है, साधे साधन योग।
कैसे आयु घटत है, बहुते भोगे भोग।79।
ख्याति किस को कहत है, भान कथन जो जान।
प्रमा किस को कहत है, प्रमाण जन्य बखान।80।
बड़ा किसी को जानिये, सहनशील जो होय।
छोटा किसे बखानिये, सबसे मांगे जोय।81।

पंडित किस को कहत हैं, धरे धर्म मन धीर।
वक्ता किस को कहत है, बोले वचन गंभीर।82।
दाता जग में कौन है, देत दान सन्मान।
कौन भिखारी जगत में, जाँको चाह महान।83।
बाप पाप का कौन है, बहुत लोभ संसार।
को परलोक बिगाड़हीं, झूठा तन अहंकार।84।
मित्र किसी को कहत है, दुःख में करे सहाय।
राजा उत्तम कौन है, प्रजा सुख पहुँचाय।85।
सब से पावन कौन है, इक आतम को जान।
कौन वस्तु अति अशुचि है, देह अनातम मान।86।
प्रारब्ध किसको कहत है, पूरब कर्म पछान।
कर्म जाल किस विधि मिटे, भये ब्रह्म के ज्ञान।87।
अन्तःकरण किमि शुद्ध हो, किये कर्म निष्काम।
मन विक्षेप किमि नाश हो, कीने प्राणायाम।88।
जग में जीवन मुक्त को, अहँब्रह्म जिहँ ज्ञान।
जगत भाव किमि दूर हो, नाशे भ्रम अज्ञान।89।
कैसे पवित्र पाद हो, तीर्थ सत्संग जाय।
कैसे पावन हाथ हो, सेवा दान लगाय।90।
सीस पवित्र होय किमि, निवे ईश गुरु संत।
अहंमेव किमि नष्ट हो, देखे सब भगवंत।91।
अंधा नर क्यों होत है, बुरे भाव लख नार।
पिंगुला नर क्यों होत है, लात बड़ों को मार।92।

मनुष्य किसी को कहत हैं, शुभवीचार मन जास।
मन पंखी किमि पंगु हो, पंख वासना नास।93।
सत्संग से क्या लाभ है, मिटे सर्व संताप।
अंत सहायी होत को, एक हरि का जाप।94।
गुरुमुख किस को कहत हैं, गुरु मति चाले जोय।
मनमुख किस को कहत है, जो मन पीछे होय।95।
ध्यान योग्य जग कौन है, सतगुरु हरि साकार।
बड़ भागी जग कौन है, नाम जपे हरवार।96।
मांस भखे का हानि है, मन बुद्धि होत मलीन।
सुरा पान से हानि का, तन धन होव खीन।97।
रिद्धि सिद्धि प्राप्त होय किमि, जप तप साधन साध।
देह भुलावा होय किमि, लागे जभी समाधि।98।
भक्ति समाधि कहत किस, भगवत में हो लीन।
योग समाधि कहत किस, योगानंद रस भीन।99।
ज्ञान समाधि कौन है, सर्व ब्रह्म ही भास।
टेऊँ द्वन्द्व किमि दूर हो, समता में कर वास।100।

।। समाप्त ।।

सत् नाम साक्षी।

शान्ति के दोहे

१. भक्त वत्सल भय हरन हरि, करुणा शील निधान।
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख भगवान।।
२. हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बन्धू दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भण्डार।।
३. मैं मांगत नहिं और कछु, सन्त दरस हरि देह।
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूँ तन एह।।
४. इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगू धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिये, हे हरि अपना नाम।।
५. जितने कणके रेत के, उतने अवगुण मोहि।
कह टेऊँ गुरु बख़्शिले, शरण पड़ा हूँ तोहि।।
६. सद्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, सन्तन माहिं निवास।।
७. सत्गुरु तुम पूरन करो, मेरी यह अरिदास।
कह टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।
८. सत्गुरु आतमज्ञान दे, हरो देह अभिमान।
कह टेऊँ सब घट विषे, दिखलाओ भगवान।।
९. रे मन राखो राम में, पूरण तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास।।
१०. राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरनि ले, खोलो अपना भाग।।
११. चिन्ता भोजन वसन की, टेऊँ करते काहिं।
हरि विश्वम्भर दे सबहिं, क्या तुम देवहिं नाहिं।।
१२. उदर भरन के कारने, भटकत काहिं अजान।
त्यागे चिन्ता पेट की, सुमरो श्री भगवान।।

१३. कहे टेऊँ संसार में, बात यही है सार।
भजन करो भगवान का, छोड़ो विषय विकार।।
१४. कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।
१५. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार।
कह टेऊँ तिहं याद कर, सुमरो सत्कर्तार।।
१६. मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जिहं दीनी नर देह।
कह टेऊँ तिस राम का, नित सुमरन कर लेह।।
१७. पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजणहार।।
१८. चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।
१९. ग़फ़्लत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जागके, भज ले श्री भगवान।।
२०. कह टेऊँ तुम चेतले, अब कछु बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं।।
२१. सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल।
अब तो ग़फ़्लत छोड़ के, सुमरो दीन दयाल।।
२२. हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं ।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं।।
२३. अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, सुमरो गुरु का नाम।।
२४. प्रात:काल जो ऊठ के , करत हरी गुण गान।
कह टेऊँ सो जगत में, होवत संत सुजान।।

२५. निशदिन कर शुभ भावना, हरि को जान हज़ूर।
कह टेऊँ मन से करो, अशुभ भावना दूर।।
२६. नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार।
कह टेऊँ शुद्ध भाव से, सबका कर सत्कार।।
२७. बुरा भला निज भाव ही, सबको सुख दुख देत।
कह टेऊँ दे और नहिं, फलत भाव का खेत।।
२८. बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।
२९. कल्प वृक्ष है आत्मा, कह टेऊँ सब माहिं।
जांकी जैसी भावना, तैसा फल दे ताहिं।।
३०. मन पर साक्षी होय तुम, धर विवेक वैराग।
कह टेऊँ जे दोष है, तांका करो त्याग।।
३१. थोरे जीवन हेत तुम, करो न पाप अजान।
कह टेऊँ मन जीत कर, पुण्य करो प्रधान।।
३२. निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आतम राम।
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।
३३. इष्ट देव भगवान की, करे उपासन जोय।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, निश्चल शुद्ध मन होय।।
३४. कर्म धर्म जप ध्यान तप, योग यज्ञ व्रत दान।
कह टेऊँ हरि हेत कर, छोड़ ममत अभिमान।।
३५. जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान।
श्रद्धा बिन फल देत नहिं, कह टेऊँ सत् मान।।
३६. प्रेम बिना पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

३७. प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान।।
३८. जिन–जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान।
टेऊँ तिन के कदम पर, झुक–झुक पड़त जहान।।
३९. बेमुख हो कर्तार से, करत जगत से प्यार।
कह टेऊँ तिस मनुष का, कबहुँ न होत उदार।।
४०. संत गुरू परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान।।
४१. हरि मेली हैं सन्त जन, हरि से देत मिलाय।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय।।
४२. जैसे जल में रहत है, अहनिश कमल अलेप।
कह टेऊँ तिमि जगत में, संत रहत निर्लेप।।
४३. संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप।
कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप।।
४४. स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई संत पछान।।
४५. जग में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान।
कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान।।
४६. जीवित जग में मरत जो, तां पर छत्र झुलंत।
टेऊँ जग तिहं पूजते, जान रूप भगवंत।।
४७. क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अंतर नाहिं।
कह टेऊँ सुर नर सभी, दर्शन चाहत ताहिं।।
४८. क्रोध त्याग क्षमा धरे, सो है पूजन योग।
कह टेऊँ तिहं दरस ते, मिट जावत सब रोग।।

४९. कली काल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान।
साधु संग हरि नाम से, टेऊँ हो कल्यान।।
५०. संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं।।
५१. पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज़।
कह टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज।।
५२. सत्संग से सत्गुरु मिले, सत्गुरु से निज ज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, मिल हैं पद निर्बान।।
५३. सत्गुरु बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान।
कह टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान।।
५४. कह टेऊँ भगवान से, सत्गुरु अधिक पछान।
कर्मों का फल देत हरि, गुरु दे मुक्ति दान।।
५५. गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय।।
५६. पूरन सत्गुरु देव से, पूरन ले उपदेश।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ पूरन देश।।
५७. सर्व व्यापक जान हरि, सबकी करिये सेव।
कह टेऊँ सब पाप हर, देखो आतम देव।।
५८. ब्रह्म आतमा एक है, सत्चित् आनन्द रूप।
कह टेऊँ ज्ञानी जिसे, जानत निज स्वरूप।।
५९. साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश।
६०. साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकाश।
कह टेऊँ तिहं जान के, पाओ सुख अविनाश।।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

सद्गुरु टेऊँरामाष्टकम्

१. निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँराम शरणं प्रपद्ये।।

२. यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोस्समीपे बत धर्म हानिम्।।
जनाञ्च सर्वान् व्यथितान् विलक्ष्य: श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार:।।

३. सुरक्ष्य धर्मं त्ववतीर्य भूमौ, प्रजासु व्याप्तञ्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मण्डल मण्डितेन, प्रकाशित: प्रेम प्रकाश मार्ग:।।

४. अष्टांगयोगे च समाहिताय, लोकोपकारे कृतनिश्चयाय।
तद् ब्रह्मतत्वे परिनिष्ठिताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय:।।

५. शिष्टैश्च सर्वैं परिपूजिताय, स्वर्गाधिपतयेऽपि च नि:स्पृहाय।
कामादि षड्वर्ग जिताय तस्मै, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

६. योगीन्द्र वृन्दै: छरिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

७. पूर्णेन्दुशोभा परिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय।
भस्मीकृताऽशेष निबन्धनाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

८. भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय।
आचार्य वर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

सद्गुरु सर्वानन्द महिमा

१. सर्वानन्द प्रदातारं, सर्वानन्द विकासकम।
सर्वानन्दावितारंच सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।

२. श्रीमान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, मुकुटालंकार रूपो गुरु:।
योग: क्षेमकर: सुपूज्य चरणौ, रामेण तुल्यो गुणै:।।
संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे, धर्म प्रचारे रत:।
सर्वानन्द यतीश्वरो विजयते, प्रेम प्रकाशे भुवि।।

:: प्रकाशक ::

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर

फोन : 0141-2372424, 23

www.prempprakashpanth.com

e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com